



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

अज्ञानी लोग अधर्म के कार्य को धर्म में और धर्म के कार्य को अधर्म में डाल देते हैं। वे दोनों ओर से बंध जाते हैं, उनकी दुर्गति होती है।

- आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली | वर्ष 25 | अंक 46 | 19 अगस्त - 25 अगस्त, 2024 | प्रत्येक सोमवार | प्रकाशन तिथि : 17-08-2024 | पेज 12 | ₹ 10 रुपये



एनआरआई समिट सम्पोजन, शांति और समाधि देने वाला सिद्ध हो : आचार्यश्री महाश्रमण आयारो आगम के माध्यम से अहिंसा के संदर्भ में समानता रखने की दी अभिप्रेरणा

सूरत।

10 अगस्त, 2024

तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सूरत के महावीर समवसरण में आयारो आगम के माध्यम से पावन पाथेय प्रदान करते हुए शस्त्र परिज्ञा के विषय में फरमाया कि छः जीव निकाय के प्रति अहिंसा की भावना पुष्ट रखें, अहिंसा के संदर्भ में समानता रखें। यदि मैं जीना चाहता हूँ तो अन्य जीव भी जीना चाहते होंगे। मुझे मारने पर कष्ट होता है तो दूसरों को भी कष्ट होता है। मुझे कोई गाली या अपशब्द कहे तो अप्रिय लगता है तो वही बात दूसरे जीवों को भी अप्रिय लगती है। मुझे सुख प्रिय है तो दूसरे प्राणियों को भी सुख प्रिय होगा। इन समानताओं को तुला के रूप में देखने का प्रयास करें। जिस प्रकार मनुष्य स्वयं जीना चाहता है तो वह दूसरों को भी न मारे, उन्हें जीने का अधिकार दे। गृहस्थ जीवन में पूर्णतया अहिंसा संभव नहीं है। हिंसा के



तीन प्रकार बताए गए हैं - आरंभजा, प्रतिक्रियात्मिकी व संकल्पजा हिंसा।

गृहस्थ में आरंभजा हिंसा तो अनिवार्य कोटी की हिंसा है, इससे सर्वथा बचना मुश्किल है। रक्षा के लिए प्रतिक्रियात्मिकी हिंसा भी आवश्यक हो सकती है पर

गृहस्थ संकल्पजा हिंसा से बचने का प्रयास करें। होटल, हॉस्टल और हॉस्पिटल में आदि जगहों पर जाना हो तो मांसाहार से बचना चाहिए। मांसाहार युक्त दवाई भी लेने से बचने का प्रयास करना चाहिए।

एनआरआई लोगों में भी धार्मिक भावनाओं का संचार होता रहे। समणश्रेणी द्वारा भारत से बाहर जाकर धार्मिक संस्कारों से जोड़ने और उसे सुरक्षित करने का प्रयास किया जाता है। तेरापंथी महासभा भी विदेशों में रहने

वाले लोगों से संपर्क कर मीडिया आदि के माध्यम से अपनी संस्कृति व अहिंसा भाव को पुष्ट रखने का प्रयास करती है।

साधु को तो किसी भी हिंसा में नहीं जाना चाहिए। उस पर कोई आक्रमण करे तो समता में रहे। साधु के अहिंसा महाव्रत है। उसकी साधना उच्च कोटि का जीवन है। गृहस्थ साधु नहीं होता लेकिन आरंभजा व प्रतिरोधजा हिंसा से उसका श्रावकपन नष्ट नहीं होता।

आचार्य प्रवर की पावन सन्निधि में जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित द्विदिवसीय एनआरआई समिट 2024 का शुभारंभ हुआ। आचार्य प्रवर ने एनआरआई समिट में संभागी बने लोगों को पावन आशीष प्रदान करते हुए फरमाया कि इतने लोगों का एक साथ पहुंचना अच्छा उपक्रम है। साधु-साधवियों के संपर्क से धार्मिक पुस्तकों, समणियों से संस्कार व ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। बालपीढ़ी और युवा पीढ़ी दोनों की संभाल करना बहुत महत्वपूर्ण है।

(शेष पेज 8 पर)

अच्छा जीवन जीने के लिए ज्ञान और आचार का होना जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

11 अगस्त, 2024

डायमंड नगरी सूरत के भगवान महावीर यूनिवर्सिटी में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में एनआरआई समिट 2024 के अंतर्गत ऑस्ट्रेलिया, न्यू गिनी, ऑस्ट्रिया, बेल्जियम, हांगकांग, इंडोनेशिया, मलेशिया, नीदरलैंड, सऊदी अरब, सिंगापुर, इंग्लैंड, अमेरिका, बहरीन, यूएई आदि देशों से करीब 200 से अधिक प्रतिनिधि पहुंचे।

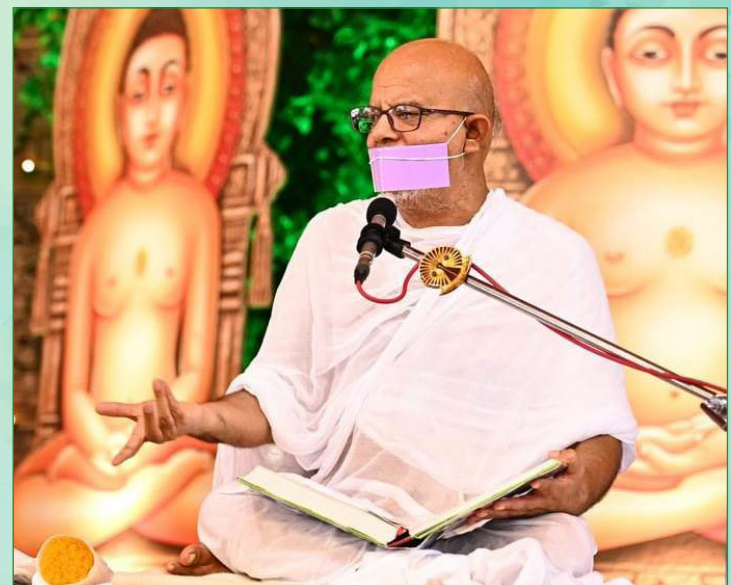
समिट के द्वितीय दिवस युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अपनी अमृत देशना के अंतर्गत कहा कि आयारो आगम में वायुकाय की हिंसा की बात आती है। जिस प्रकार जल, पृथ्वी, अग्नि व वनस्पति सजीव हैं उसी प्रकार जैन

आगमों में वायुकाय को भी सजीव माना गया है। वायु की हिंसा भी होती है।

प्रश्न हो सकता है कि वायुकाय के जीवों की हिंसा कौन करता है? बताया गया कि जो आचार में रमण नहीं करते हैं, जो आचार निष्ठ नहीं होते, वे वायुकाय की हिंसा करते हैं। साता से आकुल मानस वाले लोग वायुकाय के जीवों की हिंसा करने वाले होते हैं। सामान्य आदमी के लिए गर्मी को सहना कुछ मुश्किल हो सकता है। साधु-साधवियों को ना तो पंखा चलाना है, ना चलवाना है। जैसे भोजन, पानी के लिए गृहस्थ को हिंसा होती है, वैसे ही हवा लेने में भी गृहस्थों को हिंसा हो सकती है। इसे आवश्यक हिंसा माना जा सकता है। कुछ गृहस्थ भी पंखे और A.C. का कम से कम का उपयोग करते हैं, यह भी एक साधना है। आदमी बड़ी हिंसा से

बचने का प्रयास करे।

मनुष्य जीवन में ज्ञान का विकास भी होना चाहिए तो आचार पक्ष भी सुदृढ़ रहना चाहिए। आगम व शास्त्रों का ज्ञान बहुत श्रम करने के बाद मिलता है। विद्यार्थी अपना ज्ञान अर्जित कर डॉक्टर, इंजीनियर आदि बनते हैं, इसका अर्थ है कि उन्होंने अपना वर्षों श्रम लगाया होगा। गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के पास कितना था। कितने ग्रंथ और साहित्य उनके द्वारा लिखे गए थे। ज्ञान जीवन का एक पक्ष है। ज्ञान की आराधना भी एक सारस्वत साधना है। ज्ञान की आराधना के लिए संयम, त्याग का होना भी आवश्यक होता है। ज्ञानवान बनने के लिए श्रद्धा, निष्ठा, समर्पण और त्याग की आवश्यकता है। जीवन का दूसरा पक्ष आचार होता है। ज्ञान और आचार नहीं हो तो जीवन की



गति अच्छी नहीं हो सकती। आदमी का आचरण भी उन्नत हो तो जीवन की गति अच्छी हो सकती है।

परम पूज्य आचार्य प्रवर के मंगल

प्रवचन के पूर्व साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमारे भीतर अनंत शक्ति है।

(शेष पेज 8 पर)

त्रस जीवों की हिंसा से बचने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

सूत्र।

8 अगस्त, 2024

महामनीषी आचार्य श्री महाश्रमण जी जिनवाणी का श्रवण करते हुए फरमाया कि षट् जीव निकाय में पांच स्थावर व एक त्रस काय है। दूसरी अपेक्षा से तीन स्थावर तीन त्रसकाय हो सकते हैं। तेजसकाय, वायुकाय को गति त्रस के रूप में स्वीकार किया गया है। पृथ्वीकाय, अक्काय और वनस्पतिकाय का एक वर्गीकरण है, तेजस और वायु एक वर्गीकरण है। दोनों पर अलग-अलग नियम लागू होते हैं। त्रसकाय में दो इंद्रियों से पंचेन्द्रिय तक जीव आ जाते हैं। त्रस काय के जीव गति करने वाले होते हैं, गमन करने वाले होते हैं। स्थावर के बारे में प्रश्न हो सकता है कि उनकी वेदना का पता नहीं चलता। त्रसकाय जीवों की वेदना देखी जा सकती है। अहिंसा की दृष्टि से हम विचार करें कि जीवन के लिए स्थावर जीवों की हिंसा होती है, वनस्पति काय तो कितना काम में आती है, जीवन चलाने के लिए उनकी हिंसा से बचना मुश्किल है। साधु के लिए भी द्रव्य रूप से मुश्किल हो सकता है



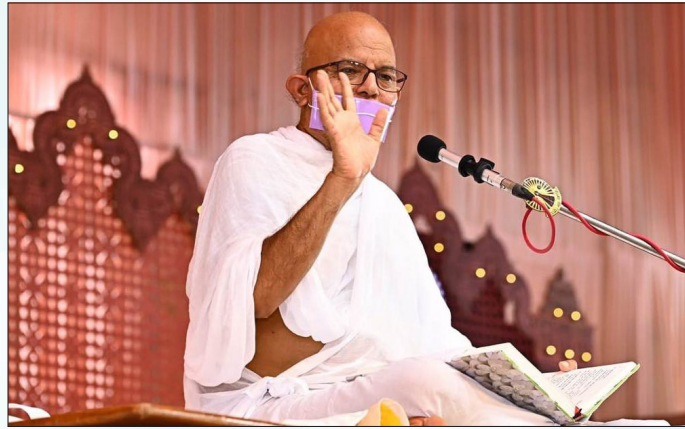
पर यह आगम सम्मत है। पंचमी में, विहार में, स्थावर काय की हिंसा हो सकती है पर इसमें अल्पीकरण का ध्यान रहे। गृहस्थ भी जितना हो सके इनसे बचने का प्रयास करे। अनंत काय के सेवन का वर्जन करे। त्रसकाय की हिंसा जरूरी नहीं है। दो प्रकार का आहार है- शाकाहार और मांसाहार। बिना मांसाहार के उपयोग से जीवन चल सकता है, पर ऐसा कोई नहीं कह सकता कि मैं केवल मांसाहार ही करूंगा शाकाहार का उपयोग नहीं करूंगा। शाकाहार में कुछ

चीज अपने आप में भी अचित्त हो सकती है, मांसाहार में तो साक्षात् पंचेन्द्रिय प्राणी को मारा जाता है। यह तो साक्षात् हिंसा है। गृहस्थों के बच्चे बाहर पढ़ने जाएं पर मांसाहार का संयम रहे। होटल, हॉस्टल, हॉस्पिटल में भी मांसाहार का उपयोग ना हो। त्रस जीवों की हिंसा से बचने का संयम रखने का हम प्रयास करें।

पूज्य प्रवर के सान्निध्य में विगत दिनों कर्नाटक के सिंधनूर में दिवंगत हुए साध्वी लावण्यश्री जी स्मृति सभा आयोजित की गई। आचार्य प्रवर ने उनका

जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए कहा यह विशेष बात रही कि वे कर्नाटक में ही जन्मी, कर्नाटक में ही उन्होंने दीक्षा ली, और कर्नाटक में ही उनका प्रयाण हो गया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि वे कई वर्षों से दक्षिण भारत की यात्रा कर रही थी। वे अपने आचार विचार के प्रति जागरूक थे। उनकी संघनिष्ठा, गुरुनिष्ठा बेजोड़ थी। वे साध्वी सोहनां जी के साथ उनकी पछेवड़ी की तरह रही। मैं उनकी आत्मा के ऊर्ध्वारोहण की मंगल कामना करती हूँ। मुख्यमुनि श्री महावीरकुमारजी ने कहा कि यह मनुष्य जन्म दुर्लभ है। इस दुर्लभ जीवन को पाकर उसका अच्छा उपयोग जो करता है वह धन्य हो जाता है। मैं मंगल कामना करता हूँ कि साध्वी श्री लावण्यश्री जी की आत्मा सिद्ध गति की ओर शीघ्र प्रगति करे। मुनि जितेंद्रकुमारजी, साध्वी दर्शनविभाजी, साध्वी परागप्रभाजी ने भी अपनी भावांजलि अभिव्यक्त की। सिंधनूर सभा के मंत्री आनंद जीरावाला ने अपने विचार व्यक्त किए। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने चौबीसी के गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अध्यात्म साधना में अवांछनीय पुण्य की कामना नहीं होनी चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण



सूत्र।

09 अगस्त, 2024

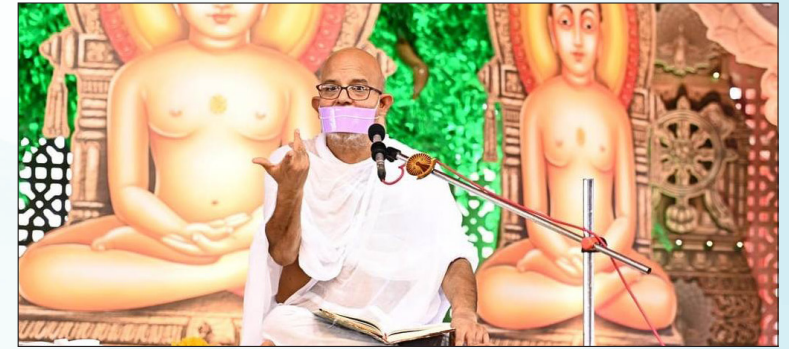
तीर्थकर के प्रतिनिधि युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आचार्य आगम में दो शब्द विशेषतया प्रयुक्त हुए हैं- अध्यात्म और बाह्य। जो अध्यात्म को जानता है, वह बाह्य को जानता है। जो बाह्य को जानता है, वह अध्यात्म को जानता है। एक अध्यात्म का जगत है, एक बाह्य जगत है। एक चेतना का एक अचेतना का जगत है। अंतरात्मा में होने वाली प्रवृत्ति अध्यात्म है, शरीर, वाणी और मन की भिन्नता अध्यात्म है।

ज्ञान तो अध्यात्म या बाह्य जगत का हो सकता है। ज्ञान अपने आप में प्रकाशित होता है, दूसरे को भी प्रकाशित

हिंसा को जानेंगे तो अहिंसा का पालन हो सकेगा। पक्ष को जानने के लिए प्रतिपक्ष को जानना होगा। अध्यात्म और बाह्य का संबंध है, कोरा अध्यात्म या कोरा बाह्य अपूर्ण ज्ञान है। अध्यात्म और विज्ञान का यथायोग्य समन्वय किया जा सकता है। परिपूर्णता के लिए अध्यात्म और बाह्य दोनों का ज्ञान हो। रहें भीतर अध्यात्म और जिओ बाहर बाह्य हो गया। हम अध्यात्म की साधना करें। ऊपरले व्याख्यान में गुरुदेव ने 'नीति रो प्यालो' के माध्यम से प्रेरणा दी कि हमारी नीति शुद्ध रहे।

साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने उद्धोधन देते हुए कहा कि चतुर्विंशति स्तव के माध्यम से हम 24 तीर्थकरों की स्तुति करते हैं। लोक में उद्योत करने वाले जिन की स्तुति करते हैं। 24 तीर्थकरों को वंदना करने से संसार सागर को पार किया जा सकता है। तीर्थकरों के नाम में अद्भुत शक्ति है, हमारे अनंत कर्म क्षय हो सकते हैं, भयंकर दावानल शांत हो जाता है। श्रद्धा से साक्षात् अनुभूति हो सकती है, नाम के साथ भावना जुड़ जाती है तो वह अचिंत्य फल देने वाली हो जाती है। पूज्य प्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। कन्या मंडल ने चौबीसी के गीत की प्रस्तुति थी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ज्ञान अर्जित करने का उत्तम माध्यम है श्रोत्र और चक्षु : आचार्यश्री महाश्रमण



सूत्र।

07 अगस्त, 2024

डायमंड सिटी सूत्र में आध्यात्मिकता का आलोक फैलाने का कार्य कर रहे आचार्य श्री महाश्रमण जी ने महावीर समवसरण में आचार्य आगम की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि सुनी हुई बात यदि आंखों से देख ली जाए तो वह पुष्ट हो जाती है। मनुष्य के पास पांच इंद्रियां होती हैं, उसमें संज्ञी मनुष्य इंद्रिय जगत की दृष्टि से विकसित प्राणी होता है। इसमें भी श्रोत्र और चक्षु मनुष्य के ज्ञान को बढ़ाने वाले होते हैं।

कुछ साधु गृह त्याग करने के पश्चात भी गृहवासी की तरह भोग, स्वाद में लीन बनकर असंयम का आचरण करने वाले होते हैं, प्रमाद में रहते हैं तो उनमें साधुता नहीं रहती। दूसरी और कुछ गृहस्थ भी ऐसे होते हैं जिनकी संयम की चेतना जाग जाती है। वे अहिंसा संयम के प्रति सजग, अपने

नियमों की अनुपालना करने वाले होते हैं, कितना भी कष्ट आ जाए अपने व्रत को नहीं छोड़ते। जीवन में अनेकों बार गुरु का नियंत्रण और अनुशासन होता है, इससे शिष्य गलतियों से बच सकता है। गुरु का सान्निध्य शिष्यों के लिए रक्षा कवच के समान होता है। शिष्य मर्यादा, अनुशासन, सारणा-वारणा, गुरु इंगित से सीखते हैं।

साधु बनकर जो संयम की निर्मलता का प्रयास रखते हैं, आसक्ति के भाव मन में नहीं लाते और स्वाद को प्राथमिकता नहीं देते, वही शिष्य ऊंची गति को प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ साधु ही नहीं गृहस्थ भी अपनी इंद्रियों का संयम करे, साधना करे तो उनके जीवन का कल्याण हो सकता है। पूज्यप्रवर के आख्यान के पश्चात मुनि उदितकुमार जी ने तपस्या हेतु प्रेरणा दी। तेरापंथ किशोर मंडल एवं तेरापंथ कन्या मंडल ने पृथक पृथक चौबीसी की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।



भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला

डोम्बिवली, मुम्बई।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी स्वामी ठाणा 4 के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा निर्देशित भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद डोम्बिवली द्वारा तेरापंथ भवन डोम्बिवली में किया गया। इस कार्यशाला में अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा, महामंत्री अमित नाहटा, सहमंत्री भूपेश कोठारी, कोषाध्यक्ष नरेश सोनी सहित स्थानीय अभातेयुप साथी सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कमलकुमार जी के नमस्कार महामंत्र उच्चारण से हुआ। मुनिश्री ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि हम तेरापंथी हैं, हमें तेरापंथ की जानकारी होनी चाहिए। हमें भिक्षु स्वामी के सिद्धांतों को गहराई से समझने की आवश्यकता है।

भिक्षु स्वामी के सिद्धांत अकाट्य हैं। भिक्षु स्वामी ने बताया- त्याग धर्म, भोग अधर्म, संयम धर्म, असंयम अधर्म, अहिंसा धर्म, हिंसा अधर्म, उपदेश से हृदय परिवर्तन करना धर्म, बलात् रोकना अधर्म है। मुनिश्री ने कहा कि तेरापंथ की त्रिपदी केवल ज्ञेय ही नहीं उपादेय भी है। वह त्रिपदी है असंयमी के जीने की वांछा करना राग, मरने की वांछा करना द्वेष और संसार



समुद्र से तरने की वांछा करना वीतराग देव का धर्म है।

स्वामीजी की इस त्रिपदी को हम सब समझे और औरों को भी समझाने का प्रयास करें। स्वामीजी जी ने दो प्रकार की अनुकंपा बतलाई- सावद्य और निर्वद्य। संसारी लोग अपने दिल दिमाग को स्पष्ट रखें कि संसार चलाने के लिए जो क्रियाएं की जाती हैं जैसे भोजन पकाना, खाना, विवाह करना-करवाना, भूखे को भोजन, प्यासे को पानी पिलाना, रोगी की चिकित्सा करना-करवाना ये सब संसार चलाने की प्रवृत्ति है, इन्हें सावद्य समझें। परंतु किसी अज्ञानी को ज्ञानी बनाना, हिंसक को अहिंसक बनाना, दुराचारी को सदाचारी बनाना, व्यभिचारी को बह्मचारी बनाना, व्यसनी को निर्व्यसनी

बनाना निर्वद्य अनुकंपा है। इस प्रकार का अभियान चलाने से व्यक्ति, परिवार, समाज देश और विश्व का कल्याण हो सकता है। कार्यक्रम में मंगलाचरण संजय खंब्या और हितेश हिरण ने किया। भगवतीलाल कच्छरा ने स्वागत किया।

अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा, महामंत्री अमित नाहटा ने अभातेयुप के त्रिआयामी उद्देश्य सेवा-संस्कार-संगठन के अंतर्गत आयामों की जानकारी दी। कार्यक्रम का संयोजन एवं आभार ज्ञापन मनोज सिंघवी ने किया। कार्यक्रम के उपरांत अभातेयुप द्वारा प्रमाण पत्र का वितरण स्थानीय तेयुप के सहयोग से किया गया। लगभग 250 श्रावक-श्राविकाओं ने कार्यशाला का लाभ उठाया।

भक्तामर स्त्रोत अनुष्ठान का हुआ आयोजन

गाँधीनगर, दिल्ली।

'शासनश्री' साध्वी रविप्रभाजी ठाणा-5 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, विकास मंच, कृष्णानगर दिल्ली में तेरापंथ युवक परिषद्, गाँधीनगर-दिल्ली द्वारा भक्तामर स्त्रोत अनुष्ठान का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 121 जोड़े व 81 अनुष्ठान किया।

साध्वीश्री के मुखारविंद से नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ तेयुप गाँधीनगर-दिल्ली द्वारा विजय गीत का संगान किया गया व श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन गाँधीनगर सभाध्यक्ष निर्मल छलाणी ने किया। तेयुप गाँधीनगर दिल्ली के अध्यक्ष अशोक सिंघी ने पधारे हुए सभी पदाधिकारियों का व अनुष्ठान में उपस्थित श्रावक-श्राविका समाज का अपने वक्तव्य से स्वागत

व अभिनंदन किया। साध्वी रविप्रभाजी ने श्रावक-श्राविका समाज को भक्तामर का महत्व बताते हुए कहा कि आचार्य मानतुंग द्वारा रचित यह स्त्रोत सर्वश्रेष्ठ माना गया है। श्वेतांबर और दिगंबर दोनों परंपराओं में इसका बहुत महत्व है। इसका एक-एक श्लोक मंत्र से ओतःप्रोत व बहुत ही चमत्कारी है। साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि स्त्रोत के साथ अर्थज्ञान भी होना जरूरी है, तभी हम इस स्त्रोत से कष्टों का निवारण कर सकते हैं।

भक्तामर स्त्रोत अनुष्ठान के प्रायोजक अनिल बैद का तेयुप गाँधीनगर-दिल्ली द्वारा स्वागत व आभार व्यक्त किया गया। संयोजक अरिहंत बैद का अथक श्रम रहा, साथ ही गाँधीनगर सभा परिवार, विकास मंच परिवार, महिला मंडल पूर्वी-दिल्ली का भी सहयोग रहा। इस अवसर पर कुशल मंच संचालन तेयुप गाँधीनगर-दिल्ली के मंत्री प्रकाश सुराणा ने किया।

त्रिदिवसीय कार्यक्रम आयोजित

राउरकेला।

आचार्य भिक्षु का 299 वां जन्म दिवस एवं 267वां बोधि दिवस तेरापंथ सभा, महिला मंडल तथा युवक परिषद ने सामूहिक रूप से मनाया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। ऊँ भिक्षु का सामूहिक रूप से सब ने जाप किया। भिक्षु स्वामी की ढालों का संगान किया गया। स

स्वामीजी की तेरस के उपलक्ष में घरों में 11 घंटे, 13 घंटे का जाप किया गया एवं रात्रि में धम्म जागरण का कार्यक्रम रखा गया। लगभग 45 भाई-बहनों ने ऊँ भिक्षु की तेरह माला फेरी। भाई-बहनों ने उपवास, एकासन, एवं बेले-तेले से अपने आराध्य की अभ्यर्थना की। द्रव्यों की सीमा, रात्रिभोजन त्याग, जमीकंद

त्याग आदि अनेक प्रकार के संकल्प किए गए। तेरापंथ स्थापना दिवस पर कन्या मंडल से यशा भंसाली और नव्या कोठारी ने भिक्षु अष्टकम् का संगान किया।

तत्पश्चात अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में संचालित मंत्र दीक्षा के कार्यक्रम का आयोजन स्थानीय युवक परिषद द्वारा आयोजित किया गया।

युवक परिषद के अध्यक्ष जीतेन्द्र दुगड़ ने सभी का स्वागत किया। ज्ञानशाला संयोजिका कनक बोथरा ने 265 वें तेरापंथ स्थापना दिवस पर अपने भाव व्यक्त किए तथा प्रश्नोत्तर द्वारा सभी को तेरापंथ धर्म के प्रति अवगत कराया। महिला मंडल की अध्यक्ष तरुलता जैन ने त्रिदिवसीय कार्यक्रम में सम्मिलित सभी का स्वागत एवं आभार किया।

तपस्या का उद्देश्य हो आत्मशुद्धता, कर्मों का अल्पीकरण

काँदिवली।

साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में पारसमल मेहता के मासखमण तप का अभिनन्दन समारोह कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी ने कहा- सुदृढ़ मनोबल वाला व्यक्ति ही तप के कठिन मार्ग पर चल सकता है। जिनशासन में तपस्या को आत्म निर्जरा का महत्वपूर्ण साधना माना गया है। तप का प्रेरक इतिहास शासन की गरिमा को उंचाई प्रदान करने वाला है।

साध्वी श्री ने कहा पूरा मेहता परिवार संस्कारी है, धार्मिक है। इससे पहले भी भाई पारस ने अनेक तपस्याएं की हैं। भगवान महावीर की वाणी है - आत्महित के लिए तप की आराधना करनी चाहिए। निर्जरा के अतिरिक्त किसी प्रयोजन से तप नहीं करना चाहिए। अध्यात्म की

साधना में जुड़ने, आगे बढ़ने का उपक्रम निर्जरा के साथ जुड़ा हुआ है। तपस्या शक्ति, शान्ति और आनन्द प्रदान करती है। तप वह औषध है जिसके सेवन से आत्मा पुष्ट बनती है, शरीर भी स्वस्थ बनता है।

साध्वीवृन्द के वीतराग स्तवन से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी अतुल्यशा जी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैत्यप्रभा जी और साध्वी शौर्यप्रभा जी ने 'मासखमण अनुमोदन-पपेट शो' कार्यक्रम प्रस्तुत किया और 'है मासखमण तप मनहारी' का संगान कर तपस्वी भाई पारस के मासखमण तप की अनुमोदना की।

तेरापंथ युवक परिषद् मलाड के अध्यक्ष जयन्ती बागरेचा ने तप अभिनन्दन पत्र का वाचन किया। तेरापंथ युवक परिषद काँदिवली अध्यक्ष राकेश सिंघवी

ने तपस्वी भाई का परिचय प्रस्तुत किया। श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन मंत्री एवं अर्हम फाउण्डेशन अध्यक्ष प्यारचन्द मेहता ने साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के संदेश का वाचन किया। पारिवारिक जनों ने सामूहिक संगान कर तप का अभिनन्दन किया। तेरापंथ महिला मंडल काँदिवली ने मासखमण तप के वर्धापन में गीत प्रस्तुत किया। मलाड एवं काँदिवली तेरापंथ सभा, श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन के पदाधिकारीगण तथा तेयुप, महिला मंडल द्वारा जैन पट्ट साहित्य एवं अभिनन्दन पत्र द्वारा मासखमण तप साधक पारस मेहता का सम्मान किया गया।

तपस्या के तप से अभिनन्दन के आह्वान पर लगभग 25 व्यक्तियों ने तप करने का संकल्प स्वीकार किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने किया।



साध्वीश्री लावण्यश्रीजी की स्मृति में चारित्रात्माओं के उद्धार

“लावण्य मुखर हुआ दशों दिशाओं में”

● साध्वी सिद्धांतश्री ●

‘चएज्ज, देह न हु धम्मसासणं’

इस आर्ष वाक्य को चरितार्थ करने वाली बालिका लीला के भीतर वैराग्य का बीज वपन किया 28 वर्षीय अग्रणी साध्वी श्री सोहनकुमारीजी 'छापर' ने। मात्र 15 वर्षीय बालिका ने गृह त्याग का महान सपना संजोकार K.G.F Kolar Gold Fields से प्रस्थान कर जयसिंहपुर (महाराष्ट्र) में संसार सागर से तारनेवाले गुरुदेव श्री तुलसी के मुखकमल से संस्था प्रवेश की अनुमति प्राप्त की। केरल, कन्याकुमारी की यात्रा में यात्रायित महायायावर श्री तुलसी के शासनकाल में चल रही चल संस्था में प्रवेश पाया। केवल 8 माह संस्था में मुमुक्षु लीला के रूप में रहकर वैराग्य को परिपक्व बनाया !

‘जाए सहदाए णिक्खंतो तमेव अणुपालिया’

इस आप्त वचन को पल-पल संग रखने वाली मुमुक्षु लीला ने सन् 1969 फूलों की नगरी बंगलोर में अपनी ननिहाल भूमि में वि. सं. 2026 कार्तिक शुक्ला पांचम के दिन अभिनिष्क्रमण किया एवं अपना सर्वस्व समर्पण श्री चरणों में कर दिया। लीला से साध्वी लावण्यश्री बन असीम धन्यता का अनुभव किया। साध्वी मंजुलाजी (गणमुक्त) के संरक्षण में एवं गुरुकुल वास में मात्र 26 दिन रहकर साधुत्व का स्वाद चखा।

‘विहार चरिया इसिणं पसत्था’

इस लक्ष्य के साथ अन्तर्यामी अनुशास्ता ने प्रतिबोध प्रदान कर साध्वी श्री सोहनकुमारी जी 'छापर' की सहवर्तिनी साध्वी के रूप में साध्वी श्री लावण्यश्रीजी को वंदना कराई। तब से लेकर 43 वर्ष तक गुरु इंगितानुसार भारत के कोने-कोने में जाकर संघ प्रभावना, संयम की साधना, आत्म आराधना एवं तिष्णाणं तारयाणं इस आर्ष वाणी को अक्षरशः जीया। सम्पूर्ण भारत में उडीसा प्रान्त को छोड़कर 'विहार चरिया इसिणं पसत्था' इस आगमोक्ति एवं चरैवैति-चरैवैति का एक लक्ष्य बना जो ठाना वो किया।

‘पुढवी समो मुणी हवेज्जा’

संयम की राह पर आए अनगिन उतार चढ़ाव एवं परिषह में मध्यस्थ भाव रख 'एक तान एक ध्यान राधा वेध साधणो' का लक्ष्य सामने रख हर स्थिति को समभाव से सहा।

लाभा लाभे सुहे दुक्खे जीविए मरणे तथा।

समो निंदा पसंसासु तथा माणावमाणओ।।

इस सिद्धान्त गाथा को चरितार्थ करने वाले कुछ प्रसंग

- एक बार Right leg में बहुत ही गहरा व्रण हो गया। उस दौरान परमपूज्य गुरुदेव श्री तुलसी श्वेतसंघ के संग उदयपुर पधार रहे थे। एक ओर प्रभु के शुभागमन पर भक्ति की तैयारियां दुसरी तरफ ग्रुप में सबसे छोटी साध्वी श्री लावण्यश्री के पैर में हुए अत्यधिक गहरे व्रण ने वेदना का प्रकोप बढ़ा दिया। बिना किसी परवाह किए हर कार्य में रत्नाधिक साध्वियों का भरपूर सहयोग किया।
- गंगाशहर चाकरी की सम्पन्नता के बाद प्रायः 15-17 किमी विहार करवा रहे थे। मेड़ता सिटी पहुंचने में लगभग 60-70 किमी शेष था कि साध्वीश्रीजी के पैर अचानक रुक गए। चिन्ता हो गई क्या करें? साध्वी श्री लावण्यश्रीजी एवं मैं (साध्वी सिद्धान्त) दो ही साध्वियां थी। साध्वी प्रबलशशाजी आदि हमारे से आगे थे। दोपहर तक इन्तजार किया पर पैर उठने का नाम नहीं ले रहे। चिन्ता चूरण करने वाले करुणासागर ने हमें भिन्न समाचारी में अहमदाबाद भिजवाया।
- अहमदाबाद चातुर्मास प्रवेश के 4 दिन बाद पैर स्लिप होने से लगभग दो माह का Bed rest था। उठना, बैठना, सोना, करवट बदलना भी भारी हो गया किन्तु समभाव से उस वेदना को सहा। उसी प्रवास के दौरान Road का कार्य चल रहा था प्रतिदिन की तरह चाय लेने गए तब अलकतरा, डाला हुआ नहीं था, आए तब गरम-गरम अलकतरा। ज्योंहि कदम बढाए, गरम-गरम अलकतरा पदत्राण के चिपक गया। पदप्राण टूट गए हाथों के सहारे बाहर निकलने की

कोशिश की गरम-गरम अलकतरा हाथों के चिपक गया। कई दिन तक उस भयंकर वेदना को भी समताभाव से सहा।

● कोविड की महामारी के दौरान साध्वी श्री जी और साध्वी दर्शितप्रभाजी दोनों को कोरोना। साध्वी श्रीजी के 50% Lungs effect हुए। ऐसी critical स्थिति! क्या करें, क्या ना करें। उस वक्त भी अपने समताभाव को अखंड रखा। पूज्यप्रवर श्री द्वारा प्रदत्त अमूल्य मंत्र 'चइत्ता भारहं वासं' का निष्ठा से, तन्मयता से जप किया और स्वस्थ बने और तमिलनाडु की यात्रा संभव हो पाई।

जब-जब हम घटनाओं का अवलोकन करते हैं तो लगता है कि उन्होने कर्मों की उदीरणा की हो। ऐसे एक नहीं, अनेक घटना प्रसंग हैं, जिसमें लाभा लाभे सुहेदुक्खे... ये सिद्धान्त गाथा चरितार्थ होती है।

समय गोयम मा पमायए :

प्रभु वीर के इस महान संदेश को जीवन के हर क्षण के साथ जीया। प्रमाद कम, अप्रमत्तता ज्यादा। ब्रह्मवेला में जागरण, जप, स्वाध्याय में गहरी तल्लीनता।

आयंकदंशी ण करेइ पावं

पापभीरुता इतनी जबरदस्त कि मेरे निमित्त से 6 काय के जीवों को मनसा वाचा कर्मणा कोई कष्ट न हो। हर क्रिया में अच्छी सावधानी, अच्छी जागरुकता हमें देखने को मिली। समय-समय पर हमें भी प्रतिबोध देते कि जीवन में पापभीरुता बढेगी तो मैत्री भाव बढेगा, मैत्री भाव बढेगा तो जीवन सार्थक होगा।

काले कालं समायरे

चारित्र रत्न अंगीकार करने के पश्चात साधु चर्या में विशेष जागरुकता प्रतिक्रमण, प्रतिलेखन, अर्हत वंदना, प्रवचन, गोचरी, सेवा प्रायः सभी कार्य आगमोक्ति के अनुसार सम्पादित होते।

चातुर्मास के इन 14-15 दिनों में उत्तराध्ययन सूत्र के 29वें अध्ययन 'सम्यक्त्व पराक्रम' प्रवचनमाला के अन्तर्गत सम्यक्त्व के महत्त्व को बहुत ही सरल, सहज तरीके से समझाया। सम्यक्त्व जीव के सात बोलों का बंधन नहीं होता, यह बात हर श्रोता के दिलोदिमाग में बिठा दी। हमारा सम्यक्त्व कैसे पुष्ट होता है इसका वर्णन प्रतिदिन छोटे-छोटे प्रयोग कहानी, आगमसूक्त द्वारा बताया। सबको दृढ़ समकितधारी श्रावक-श्राविका बनने की सतत प्रेरणा प्रदान की।

‘इमं शरीरं आणिच्चं, दुल्लहे खलु माणुसे भवे’

ऐसे दुर्लभतम आप्त वचनों को प्रतिपल प्रतिक्रमण ध्यान में रख जीवन के हर लम्हे का, हर अवसर का भरपूर लाभ उठाया। अंतिम क्षणों में खामेमि सव्व जीवे... पक्खी प्रतिक्रमण किया, 84 लाख जीव योनी से खमतखामणा किए।

हम दोनों के सिर पर हाथ रख अमित वात्सल्य उंडेलते हुए खमतखामणा किये और 15 दिन के त्याग करवाये।

श्रावण कृष्णा अमावस्या के दिन “धम्मं च कुणमाणस्स सफला जंति राइओ” इस आर्षोक्ति को साकार करते हुए पूरा दिन जप में, स्वाध्याय में, सिलाई में व्यतीत हुआ। अंतिम क्षणों में पक्खी प्रतिक्रमण कर 84 लाख जीवयोनि से खमतखामणा कर मानो अपनी आत्मा को अतीव हल्की बना लिया हो।

उपरोक्त सभी आगमोक्तियों को अक्षरशः जीनेवाली उस दिव्य, पवित्र, निर्मल आत्मा के लिए प्रभु का पावन संदेश ! सोहि उज्जुय भुयस्स, धम्मो सुधदस्स चिट्ठई निव्वाणं परमं जाइ धयसित्तव्व पावए।

जुद्धारिह खलु दुल्लहः

युद्ध का क्षण दुर्लभ होता है।मानो अंतिम स्थिति में शरीर और आत्मा के बीच हो रहे उस युद्ध में भी अपनी आत्मा को ही विजयी बनाया और उत्तर कर्णाटक सिन्धनूर तेरापंथ भवन में अंतिम श्वास लिया।

‘चएज्ज देहं ण हु धम्मसासणं’

आगमोक्ति को साकार किया। ऐसी विजयी यात्रा करने वाली दिव्य आत्मा को श्रद्धाप्रणति।

विलक्षण व्यक्तित्व की विलक्षण कहानी

● साध्वी दर्शितप्रभा ●

सोहनां ने दक्षिण भारत में, लीला का वैराग्य जगाया। अन्तर्यामी! श्री तुलसी ने, सोहनां को लावण्य दिराया।।

संस्था प्रवेश की अनुमति पाई, महाराष्ट्र के जयसिंहपुर में। संयम की Golden Jubilee भी, महाराष्ट्र के जयसिंहपुर में।।

अभिनिष्क्रमण किया लीला ने, गुरुवर की दक्षिण यात्रा में। गुरु इंगित पा अर्धसदी पश्चात्, पुनः दक्षिण यात्रा में।।

श्रीमुख से गुरु (तुलसी) ने फरमाया, कभी न भूलना तमिल भाषा। आशीष बना वरदान गुरु का, पूर्ण करी गुरु की अभिलाषा।।

जन्म हुआ था स्वर्णनगर (KGF) में, पुष्पनगर (बंगलोर) में संयम पाया। अन्न नगर में कर प्रयाण, दक्षिण का गौरव खूब बढ़ाया।।

प्रथम बार दक्षिण की यात्रा, सबसे छोटी श्रमणी लावण्य। पुनः करी जब दक्षिण यात्रा, अग्रगण्य थी श्रमणी लावण्य।।

दक्षिण भारत में जन्म लिया, प्रतिबोध मिला दक्षिण भारत में। दक्षिण भारत में ग्रुप नियुक्ति, दक्षिण की पहली साध्वी क्षेत्रण भारत में।।

तन की छाया बन करवाई, 4-4 माईतों की सेवा। पहुंचाई चित्त समाधि सबको, पा गुरु से सेवा का मेवा।।

हुई कसौटी जब-जब तेरी, निखरे बनकर असली कंचन। गुरुवरत्रय, साध्वीप्रमुखात्रय, अग्रणीद्वय का जीत लिया मन।।

आगम मनीषी दुलहराजजी, स्वामी की तुम सगी भाणजी। जब-जब जाते गुरुकुल में, तब शिक्षा फरमाते मामाजी।।

घटी अचानक अनहोनी घटना, स्वर्ग सिधारे लज्जावतीजी। अग्रगण्य की करो वंदना, कृपा बरसाए ज्योतिचरण श्री।।

52 वर्षों पूर्व हुआ, पहला चौमासा चेन्नई में।

52 वर्षों बाद हुआ, अंतिम चौमासा भी चेन्नई में।।

साध्वी सोहनां जी चेन्नई पावस, पश्चात जाओ उत्तर कर्नाटक सिंधनूर में। साध्वी लावण्य श्री चेन्नई पावस, पश्चात उत्तर कर्नाटक सिंधनूर में। किंतु दोनों का चातुर्मास पूर्ण न हो पाया सिंधनूर में।।

लावण्यश्रीजी प्रौढ़ और विदुषी साध्वी थी

● मुनि कमल कुमार ●

साध्वी लावण्यश्रीजी एक प्रौढ़ और विदुषी साध्वी थी। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के करकमलों से दीक्षा ग्रहण की। वे आगम मनीषी बहुश्रुत परिषद के सदस्य मुनिश्री दुलहराजजी स्वामी की नातीली थी। उन्होंने लंबे समय तक साध्वीश्री सोहनांजी छापर की तन्मयता से सेवा की। उनके घुटनों में दर्द रहता था फिर भी उनकी भावना को साकार करने के लिए युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने कर्णाटक, तमिलनाडु की यात्रा की स्वीकृति प्रदान करवाई और उन्होंने दोनों प्रांतों में यात्रा कर अपने नातीले परिचितों की अच्छी सार-संभाल की। इस बार भी अपनी सहयोगी साध्वी दर्शितप्रभाजी की जन्म स्थली पर चतुर्मास के लिए पहुंच गईं। परंतु आयुष्य का कोई पता नहीं चलता। चलते-फिरते धर्मसंघ की प्रभावना करते-करते अंतिम श्वास लिया। उन्होंने अपना संयम जीवन सफल और सार्थक किया। उनके प्रति मंगल कामना करें कि उनकी आत्मा उत्तरोत्तर विकास करती हुई चरम लक्ष्य को प्राप्त करें।



संक्षिप्त खबर

जीत हासिल करने का जज्बा है ज्ञानशाला

उदयपुर। आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या डॉ. साध्वी परमयशजी के सान्निध्य में ज्ञानशाला प्रशिक्षिका प्रशिक्षण शिविर का समायोजन हुआ। साध्वी श्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि ज्ञानशाला आचार्य तुलसी का एक अवदान है जिससे भावी पीढ़ी का निर्माण होता है। संस्कार मॉल में नहीं, मार्केट में नहीं, परिवार के माहौल में मिलते हैं। बच्चों को भले कार न मिले पर अच्छे संस्कार अवश्य मिलें। ज्ञानशाला में ज्ञानार्थी करियर बनाते हैं, केरेक्टर बनाते हैं, करेज और कॉन्फिडेंस सीखते हैं, कंसंट्रेशन की कला सीखते हैं। ज्ञानशाला में क्वालिटी और क्वांटिटी दोनों बढ़ें। आपने आगे कहा कि ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं की कार्यशाला ज्ञान प्राप्ति का द्वार है नयी रोशनी का देवदार है। ये बहनें आत्मविश्वास की ताकत पैदा करती हैं। बच्चों की लाइफ का हर पन्ना विटामिन से भरपूर करने का उत्साह-उमंग लिए आती हैं। विनय-विवेक का मुकुट कोमल सुकुमार पीढ़ी को पहनाती है। मुख्य प्रशिक्षिका सुनीता बैंगानी ने प्रशिक्षिकाओं का परिचय करवाया। साध्वी विनम्रयशजी, साध्वी मुक्ताप्रभाजी और साध्वी कुमुदप्रभाजी ने 'पल-पल का करें समायोजन' गीत का संगान किया।

तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन

शाहदरा, दिल्ली। ओसवाल भवन में विराजित आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी संगीतश्रीजी ठाणा-4 के सान्निध्य में 265वें तेरापंथ स्थापना दिवस के भव्य कार्यक्रम का आयोजन हुआ। साध्वीश्री ने कहा- आचार्य भिक्षु ने हमें एक ऐसा राजमार्ग दिया जिस पर चलकर हम अपने जीवन का निर्माण कर रहे हैं। आचार्य भिक्षु सत्य के पुजारी थे, वे अपने सत्य पर अडिग रहे। आचार्य भिक्षु ने नहीं सोचा था कि मुझे संघ बनाना है, उनका सत्य साधना का लक्ष्य था, आगम के आधार पर अपनी साधना करते-करते चरैवेति-चरैवेति गति से आगे बढ़ते रहे और तेरापंथ संघ बन गया। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण जैसे गुरु हमें मिले जो हमें पग-पग पर मार्गदर्शन दे रहे हैं। साध्वी शांतिप्रभाजी, साध्वी कमलविभाजी व साध्वी मुदिताश्रीजी ने तेरापंथ की स्थापना के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, शाहदरा सभा के अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी, तेयुप दिल्ली के अध्यक्ष राकेश बैंगानी, ओसवाल समाज के अध्यक्ष आनंद बुच्चा, पूर्व उप महापौर संजय गोयल, आदि ने अपने विचार रखे।

हर घर टीटीएफ कार्यशाला का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ टास्क फोर्स (टीटीएफ) द्वारा आपातकालीन चिकित्सा प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन जूम मीटिंग (ऑनलाइन) द्वारा किया गया। कार्यक्रम में 67 प्रतिभागियों की उपस्थिति रही। जूम कार्यशाला से जुड़े पूर्वांचल के लोगों के लिए बहुत ही लाभदायक एवं ज्ञानवर्धक कार्यशाला रही। सभी ने इस कार्यशाला को पूर्ण एकाग्रता और ध्यान से सुना और समझा। टीटीएफ प्रशिक्षक विवेक जैन एवं श्रेणिक जैन ने सरल शब्दों में विपदा के मानव सेवा के प्रयोग समझाए।

स्वास्थ्य जांच शिविर

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेन्टर श्रीरामपुरम के अंतर्गत आद्यप्रवर्तक आचार्य श्री भिक्षु का 299वें जन्म दिवस व 265वें तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में रियायती शुल्क पर विटामिन बी12, विटामिन डी3 एवं रिनल फंक्शन जांच समायोजित किया गया। इस शिविर में कुल 88 सदस्य लाभान्वित हुए।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **इस्लामपुर।** पुष्पराज सुमन सिंघी की दोहित्री एवं कन्हैयालाल पुष्पा देवी चोरडिया (निवासी चाड़वास प्रवासी काठमांडू) के पुत्र व पुत्रवधू वरुण कल्पना चोरडिया के कन्या धन की प्राप्ति पर नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक प्रमोद सिंघी द्वारा संपादित करवाया गया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **सूरत।** पंकज-शिवाजी बोथरा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक पवन बुच्चा, बजरंग बैद ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **सूरत।** बालोतरा निवासी सूरत प्रवासी नरपत गोठी के सुपुत्र मुकेश गोठी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक नरेन्द्र भंसाळी, अमित चोपड़ा ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

नूतन प्रतिष्ठान

■ **सूरत।** फाजिल्का निवासी सूरत प्रवासी ओमप्रकाश जैन के सुपुत्र प्रांजल जैन के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक अरविंद बाफना, बजरंग बैद ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **भीलवाड़ा।** रोशन लाल महावीर कुमार चेतन कुमार चिप्पड़, भीलवाड़ा के नूतन प्रतिष्ठान नाकोड़ा एंटरप्राइजेज के शुभारम्भ का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से करवाया गया। इस कार्यक्रम में निर्मल सुतरिया, सुमित नाहर ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया।

तप की ईंटों से मजबूत बनी है तेरापंथ की नींव

पीतमपुरा।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में खिलोनी देवी धर्मशाला में 265 वां तेरापंथ स्थापना दिवस एवं मंत्र-दीक्षा का कार्यक्रम विशाल उपस्थिति में आयोजित हुआ। साध्वीश्री ने अपने वक्तव्य में कहा आचार्य भिक्षु ने तेले की तपस्या के साथ तेरापंथ की स्थापना आषाढ़ी पूनम के दिन की। तप की ईंटों से इसकी नींव मजबूत बनी हुई है एवं पूर्ण तिथि को तेरापंथ की स्थापना कर तेरापंथ को चिरकाल तक पूर्ण होने का वरदान दिया है। एक आचार्य के नेतृत्व में चलने वाला यह तेरापंथ धर्मसंघ मर्यादा की लक्ष्मण रेखाओं पर आगे बढ़ रहा है। आज का दिन गुरु के श्री चरणों में श्रद्धा, भक्ति और समर्पण की

वर्धमानता की प्रेरणा दे रहा है। साध्वीश्री ने कहा- गुरु पूर्णिमा का यह दिन गुरु की महिमा गाने का दिन है। गुरु हमारी जीवन रूपी पतवार को भवसागर के पार पहुंचा सकता है। गुरु वह सूरज है जो हमारे जीवन को आलोक से भर देता है। गुरु वह चांद है जो अपनी चांदनी से सबको शीतलता प्रदान करता है।

हम सौभाग्यशाली हैं, हमें आचार्य भिक्षु जैसे गुरु मिले एवं वर्तमान में तीर्थकल्प आचार्य महाश्रमणजी की सन्निधि में साधना-आराधना कर रहे हैं। आचार्य श्री महाश्रमणजी के सन्निध्य में हमारी साधना आराधना प्रवर्धमान रहे।

साध्वीश्री ने नौ साल तक के ज्ञानार्थियों को मंत्र-दीक्षा प्रदान की। साध्वी कर्णिकाश्री जी ने मंच का संचालन करते हुए आचार्य भिक्षु द्वारा की

गई धर्मक्रान्ति का उल्लेख किया। डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी एवं साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। साध्वी समत्वयशजी ने ग्यारह आचार्यों पर गीत के माध्यम से रोचक प्रस्तुति दी, जिसमें तेरह बहनों ने ग्यारह आचार्यों की जीवन झांकी प्रस्तुत की।

महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड़, दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया, उपाध्यक्ष विमल बैंगानी, महिला मंडल अध्यक्ष मधु सेठिया ने विचार व्यक्त किए। मानसरोवर गार्डन सभा के सदस्यों की मंगलाचरण के रूप में प्रभावक प्रस्तुति रही। विजय गीत का संगान तेयुप साथियों ने किया।

आभार ज्ञापन रवि प्रकाश जैन ने तथा मंत्र दीक्षा का संचालन तेयुप मंत्री मुदित लोढ़ा ने किया।

नवरंगी तप प्रत्याख्यान एवं अभिनंदन कार्यक्रम

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमारजी ठाणा 3 के सान्निध्य में नवरंगी तप प्रत्याख्यान एवं अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन प्रेक्षा विहार में साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा किया गया। इस अवसर पर उपस्थित नवरंगी तप आराधकों व धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने

कहा- तपस्या पुरस्कार के लिए नहीं, प्रकाश के लिए करनी चाहिए। तपस्या संसार के लिए नहीं संन्यास के लिए करनी चाहिए। तप से कर्म तंतु प्रकंपित होते हैं। तपस्या वही व्यक्ति कर सकता है जिसके अन्तराय कर्म का क्षयोपशम होता है।

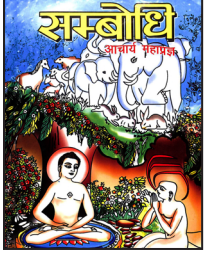
जिन भाई-बहनों ने नवरंगी तप में अपनी सहभागिता दर्ज कराई वे सब साधुवाद के पात्र हैं। इस अवसर पर

तप अनुमोदना एवं अभिनंदन में साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफणा, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष गगनदीप बैद, तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री रेखा बैंगानी ने अपने विचार व्यक्त किये।

आभार सभा मंत्री बसंत पटावरी ने व संचालक मुनि परमानंद जी ने किया। सभा द्वारा तपस्वियों का सम्मान किया गया।



संबोधि

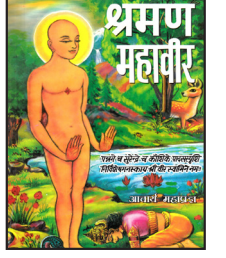


गृहस्थ-धर्म प्रबोधन



-आचार्यश्री महाश्रमण

श्रमण महावीर



ध्यान, आसन और मौन

गीता का अनासक्ति योग और जैन के अनासक्त योग में साम्य नहीं है। अनासक्तिपूर्वक किया गया कोई भी और कैसा भी कार्य बंधन-रहित है, यह जैन धर्म को स्वीकार नहीं है। स्थितप्रज्ञ और अनासक्त के लक्षणों को देखने से लगता है, वह एक उच्च सीमा की अनासक्ति है, जहां राग, द्वेष, मोह आदि को स्थान नहीं है।

मन और इन्द्रियों का भी बहिर्मुखता में अवकाश नहीं है। आत्मा क्रमशः स्वयं में ही विलीन हो जाती है। 'परमाप्नोति पुरुषः' आत्मा परमात्मा बन जाती है। परमात्मदशा वीतराग दशा है, वहां कर्म का प्रवाह मंदतम होता है। शरीर-त्याग की स्थिति में वह सर्वथा रुक जाता है।

२६. सम्यग्दृष्टेरिदं सारं, नानर्थं यत्प्रवर्तत।
प्रयोजनवशाद् यत्र, तत्र तद्वान्न मूच्छति॥

सम्यग्दृष्टि बनने का यह सार है कि वह अनर्थ प्रयोजन बिना प्रवृत्ति नहीं करता और प्रयोजनवशा जो प्रवृत्ति करता है, उसमें भी सम्यग्दृष्टि वाला आसक्त नहीं होता।

२७. सम्मतानि समाजेन, कुर्वन् कर्माणि मानसम्।
अनासक्तं निदधीत, स्याल्लेपो न यतो दृढः॥

समाज द्वारा सम्मत कर्म को करता हुआ व्यक्ति मन को अनासक्त रखे, जिससे वह उसके दृढ़ लेप से लिप्त न हो।

२८. अविरतिः प्रवृत्तिश्च, द्विविधं बन्धनं भवेत्।
प्रवृत्तिस्तु कदाचित् स्यादविरतिर्निरन्तरम्॥

बंधन के दो प्रकार हैं-अविरति और प्रवृत्ति। प्रवृत्ति कभी-कभी होती है, अविरति निरंतर रहती है।

२९. दुष्प्रवृत्तिमकुर्वाणो, लोकः सर्वोऽप्यहिंसकः।
परन्त्वविरतेस्त्यागान्, मानवः स्यादहिंसकः॥

दुष्प्रवृत्ति नहीं करने वाला यदि अहिंसक हो तो सारा संसार ही अहिंसक हो सकता है। क्योंकि कोई भी व्यक्ति निरंतर दुष्प्रवृत्ति नहीं करता। परन्तु अहिंसक वह होता है, जो अविरति का त्याग करे अर्थात् कभी और किसी प्रकार की हिंसा न करने का दृढ़ संकल्प करे।

३०. दुष्प्रवृत्तः क्वचित् साधुर्नाऽव्रती स्यान्मुनिः क्वचित्।
सत्प्रवृत्तोऽपि नो साधुव्रती जायते क्वचित्॥

साधु कहीं-कहीं प्रमादवशा दुष्प्रवृत्त हो सकता है पर अव्रती कहीं भी मुनि नहीं हो सकता। अव्रती सत्प्रवृत्ति करने पर भी कभी साधु नहीं बनता।

अनासक्ति और आसक्ति के परिणामों के कर्मफल में भेद होता है। लेकिन प्रश्न यह होता है कि अनासक्त व्यक्ति के बंधन का हेतु क्या है, जबकि वह निःस्वार्थ वृत्ति से कार्य करता है।

बंधन का मुख्य हेतु है अविरति। हिंसा, झूठ, चोरी, अब्रह्मचर्य और परिग्रह की सूक्ष्म या स्थूल जो प्रवृत्ति है या अत्यागवृत्ति है उसका नाम अविरति है। व्यक्ति जब तक अविरति से मुक्त नहीं होता तब तक कर्म का आगमन निरुद्ध नहीं होता।

अविरति आत्मा की बहिर्दशा है और विरति अंतर्दशा। विरत व्यक्ति किसी भी परिस्थिति, में हिंसा आदि न करता है, न कराता है और न करते हुए व्यक्तियों का अनुमोदन ही करता है। हिंसा आदि कार्यों में व्यक्ति अनवरत प्रवृत्त नहीं रहता, किन्तु अविरति का प्रवाह सतत चलता रहता है। तन्द्रा और मूर्च्छित स्थिति में भी वह बंद नहीं होता। प्रवृत्ति को ही यदि हिंसा आदि का कारण मानें तो वह सबके सदा नहीं होती। व्यक्ति उसके अभाव में अहिंसक बन सकता है। यह स्थूल सत्य है, वास्तविक नहीं। सूक्ष्म सत्य वही है जहां अविरति का त्याग है। अविरति के त्याग में सूक्ष्म और स्थूल दोनों ही प्रवृत्तियां विशुद्ध हो जाती हैं।

(क्रमशः)

मैं बहुत-बहुत कृतज्ञता ज्ञापित कर अपने अन्तःकरण में लौट आया। मैंने सोचा, जिन लोगों के मानस में महावीर की दीर्घतपस्विता की प्रतिमा अंकित है, उनके सामने मैं महावीर की दीर्घध्यानिता की प्रतिमा प्रस्तुत करूं।

महावीर ने दीक्षित होकर पहला प्रवास कर्मारग्राम में किया। ध्यान का पहला चरण-विन्यास वहीं हुआ। वह कैवल्य-प्राप्ति तक स्पष्ट होता चला गया।

कुछ साधक ध्यान के विषय में निश्चित आसनों का आग्रह रखते थे। महावीर इस विषय में आग्रहमुक्त थे। वे शरीर को सीधा और आगे की ओर कुछ झुका हुआ रखते थे। वे कभी बैठकर ध्यान करते और कभी खड़े होकर। वे अधिकतर खड़े होकर ध्यान किया करते थे। वे शिथिलीकरण को ध्यान के लिए अनिवार्य मानते थे, इसलिए वे खड़े हों या बैठे, कायोत्सर्ग की मुद्रा में ही रहते थे। श्वास की सूक्ष्म क्रिया के अतिरिक्त अन्य सभी (शारीरिक, वाचिक और मानसिक) क्रियाओं का विसर्जन किए रहते थे।^२

कुछ साधक ध्यान के लिए निश्चित समय का आग्रह करते थे। महावीर इस आग्रह से मुक्त थे। वे अधिकांश समय ध्यान में रहते थे। उन्हें न शास्त्रों का अध्ययन करना था, और न उपदेश। उन्हें करना था अनुभव या प्रत्यक्ष बोध। वे दूसरों की गायें चराने वाले ग्वाले नहीं थे जो समूचे दिन उन्हें चराते रहे और दूध दूहने के समय उनके स्वामियों को सौंप आएँ। अपनी गायें चराते और उनका दूध दूहते थे।

महावीर स्वावलंबन और निरावलंबन-दोनों प्रकार का ध्यान करते थे। वे मन को एकाग्र करने के लिए दीवार का आलंबन लेते थे। प्रहर-प्रहर तक तिर्यग्भक्ति (दीवार) पर अनिमेषदृष्टि टिकाकर ध्यान करते थे। इस त्राटक साधना से केवल उनका मन ही एकाग्र नहीं हुआ, उनकी आंखें भी तेजस्वी हो गईं। ध्यान के विकासकाल में उनकी त्राटक-साधना (अनिमेषदृष्टि) बहुत लम्बे समय तक चलती थी।

एक बार भगवान् दृढ़भूमि प्रदेश में गए। पेड़ाल नाम का गांव व पोलाश नाम का चैत्य। वहां भगवान् ने 'एकरात्रि की प्रतिमा' की साधना की। आरंभ में तीन दिन का उपवास किया। तीसरी रात को शरीर का व्युत्सर्ग कर खड़े हो गए। दोनों पैर सटे हुए थे और हाथ पैरों से सटकर नीचे की ओर झुके हुए थे। दृष्टि का उन्मेष-निमेष बंद था। उसे किसी एक पुद्गल (बिन्दु) पर स्थिर और सब इन्द्रियों को अपने-अपने गोलकों में स्थापित कर ध्यान में लीन हो गए।

यह भय और देहाध्यास के विसर्जन की प्रकृष्ट साधना है। इसका साधक ध्यान की गहराई में इतना खो जाता है कि उसे संस्कारों की भयानक उथल-पुथल का सामना करना पड़ता है। उस समय जो अविचल रह जाता है, वह प्रत्यक्ष अनुभव को प्राप्त करता है। जो विचलित हो जाता है वह उन्मत्त, रुग्ण या धर्मच्युत हो जाता है। भगवान् ने इस खतरनाक शिखर पर बारह बार आरोहण किया था।

साधना का ग्यारहवां वर्ष चल रहा था। भगवान् सानुलद्विय गांव में विहार कर रहे थे। वहां भगवान् ने भद्र प्रतिमा की साधना प्रारम्भ की। वे पूर्व दिशा की ओर मुंह कर कायोत्सर्ग की मुद्रा में खड़े हो गए। चार प्रहर तक ध्यान की अवस्था में खड़े रहे। इसी प्रकार उन्होंने उत्तर, पश्चिम और दक्षिण दिशा की ओर अभिमुख होकर चार-चार प्रहर तक ध्यान किया।

इस प्रतिमा में भगवान् को बहुत आनन्द का अनुभव हुआ। वे उसकी श्रृंखला में ही महाभद्र प्रतिमा के लिए प्रस्तुत हो गए। उसमें भगवान् ने चारों दिशाओं में एक-एक दिन-रात तक ध्यान किया।

ध्यान की श्रेणी इतनी प्रलंब हो गई कि भगवान् उसे तोड़ नहीं पाए। वे ध्यान के इसी क्रम में सर्वतोभद्र प्रतिमा की साधना में लग गए। चारों दिशाओं, चारों विदिशाओं, ऊर्ध्व और अधः- इन दसों दिशाओं में एक-एक दिन-रात तक ध्यान करते रहे।

(क्रमशः)



धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है
उत्कृष्ट मंगल

२. सु + आ + ध्याय

सु- अच्छा, आ समग्रता से

ध्याय - चिन्तन, मनन

अच्छे (आध्यात्मिक) तथ्यों पर चिन्तन-मनन करना स्वाध्याय है।

३. स्व + अध्याय

स्व अपना, अध्याय अध्ययन अपने बारे में अध्ययन करना स्वाध्याय है।

स्वाध्याय का उद्देश्य

जन साधारण जीविका निर्वाह को शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य मानता है। जीविका-निर्वाह आवश्यक है पर वह हमारे जीवन का अनन्य लक्ष्य नहीं है। हम भोजन-पानी आदि के द्वारा अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेते हैं। पर हमारी आत्मा की भी कोई अपेक्षा या खुराक होती है। इस तथ्य को हम अक्सर भूल जाते हैं। हमारी आन्तरिक अपेक्षाओं की पूर्ति का एक सशक्त साधन है- सत्साहित्य का स्वाध्याय।

दशवैकालिक सूत्र में अध्ययन के चार उद्देश्य बतलाए गए हैं-

१. सुयं में भविस्सङ्गति अज्झाडयव्वं भवइ।

२. एगगचित्तो भविस्सामित्ति अज्झाडयव्वं भवइ।

३. अप्पाणं ठावइस्सामित्ति अज्झाडयव्वं भवइ।

४. ठिओ परं ठावइस्सामित्ति अज्झाडयव्वं भवइ।

अध्ययन का प्रथम उद्देश्य है ज्ञान-प्राप्ति। दूसरा उद्देश्य है- चित्त की एकाग्रता। तीसरा उद्देश्य है- अपने आप को समाधि एवं शान्ति में स्थापित करना। अध्ययन का चौथा उद्देश्य है- स्वयं शान्ति एवं समाधि में स्थित होकर दूसरों को समाधिस्थता में निमित्त बनना।

प्राचीन आचार्यों ने परमात्मा प्राप्ति के साधनों का उल्लेख करते हुए कहा-

स्वाध्यायाद् ध्यानमध्यास्तां, ध्यानात् स्वाध्याय मामनेत्।

स्वाध्याय ध्यानसम्पत्त्या परमात्मा प्रकाशते ॥

स्वाध्याय के बाद साधक ध्यान का अवलम्बन ले और फिर ध्यान के बाद स्वाध्याय में संलग्न हो। इस प्रकार स्वाध्याय और ध्यान के सतत अभ्यास से चेतना प्रकाशित हो जाती है।

स्वाध्याय के प्रकार

१. वाचना- अध्यापन करना। वाचना का शिष्याध्यापनम् (शिष्यों को पढ़ाना) अर्थ मिलता है। यह प्रश्न उठता है कि अध्यापन या पाठन करने वाले गुरुओं के तो 'वाचना' स्वाध्याय होता है। परन्तु शिष्य गुरु से पढ़ते हैं अथवा पुस्तक आदि पढ़ते हैं उनके कौन-सा स्वाध्याय होता है? उनका पढ़ना भी 'वाचना' के अन्तर्गत मान लिया जाए तो क्या कठिनाई है? अध्ययन और अध्यापन दोनों को ही 'वाचना' के सीमाक्षेत्र में रखना असंगत प्रतीत नहीं होता।

२. प्रतिप्रच्छना- अज्ञात विषय की जानकारी या ज्ञात विषय की विशेष जानकारी के लिए प्रश्न करना। पूछना भी ज्ञानवृद्धि में सहायक बनता है। श्रीमद् भगवद् गीता में ज्ञान वृद्धि के लिए पूछने का निर्देश किया गया है-

तद्विद्धि प्रणिपातेन, परिप्रश्नेन सेवया।

प्रणाम, प्रश्न और सेवा के द्वारा ज्ञान को जानो। जिज्ञासावृत्ति से ज्ञान की स्पष्टता हो सकती है।

३. परिवर्तना- परिचित विषय को स्थिर रखने के लिए उसे बार-बार दोहराना।

४. अनुप्रेक्षा- परिचित और स्थिर विषय पर चिंतन करना।

५. धर्मकथा- स्थिरीकृत और चिंतित विषय का उपदेश करना।

स्वाध्याय ज्ञानप्राप्ति का एक उपाय है। पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी से ज्ञात हुआ कि उनके गुरुवर परमपूज्य कालूगणी फरमाते थे-

खान-पान सब ही तजै, निश्चै मांडे मरण।

'घो. चि. पु. लि.' करतो रहै, जद आवै व्याकरण॥

(क्रमशः)



जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री रायचन्दजी युग

मुनिश्री मोतीजी (दुधोड़) दीक्षा क्रमांक : 118

मुनिश्री सेवार्थी एवं तपस्वी साधक थे। शीतकाल में शीत सहना, उष्णकाल में आतापना लेना और वर्षा ऋतु में तपस्या करना उनके जीवन का क्रम था। मुनिश्री ने उपवास, बेले, तेले तथा चोले आदि बहुत थोकड़े किये। ऊपर में आपने उदयपुर में पानी के आगार से 108 दिन का तप किया, जो भैक्षव शासन में सर्वोत्कृष्ट है।

- साभार: शासन समुद्र -

अगस्त 2024

सप्ताह के विशेष दिन

26 अगस्त

भगवान
सुपार्श्वनाथ च्यवन
कल्याणक

30 अगस्त

आचार्यश्री जीतमलजी
महाप्रयाण दिवस व
आचार्यश्री डालचंद जी दीक्षा
दिवस

1 सितम्बर

पर्युषण
प्रारम्भ

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

समाचार प्रेषकों से निवेदन

समाचार केवल वर्ड या पीडीएफ
फॉर्मेट में abtyptt@gmail.com
ईमेल पर ही भेजें।

निवेदक : अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

❖ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।
- आचार्य श्री महाश्रमण



ऑनलाईन पढ़ने के लिए

terapanthtimes.com

तप से अतीत के पाप कर्मों का प्रक्षालन होता है

मासखमण तप अभिनंदन का कार्यक्रम

साउथ हावड़ा।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तथा साउथ हावड़ा तेरापंथ सभा के तत्वावधान में गुलाबचंद दुगड़ (बेलूड़) के मासखमण तप अभिनंदन समारोह का आयोजन प्रेक्षा विहार में हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- जैन धर्म में तप का विशिष्ट स्थान है।

तप से अतीत के पाप कर्मों का प्रक्षालन होता है, अनागत की वासना का विसर्जन होता है, वर्तमान में आत्म

शक्ति का प्रवर्धन होता है। तप से देहासक्ति का सम्यक् विसर्जन होता है, आत्मा का तेज बढ़ता है, अपूर्व निर्जरा होती है। तप आत्मशोधन जीवन जागरण और बंधन मुक्ति का उपाय है। जिसका मनोबल मजबूत होता है और घर का वातावरण अनुकूल होता है वही तपस्या कर सकता है।

मुनिश्री ने आगे कहा जिनशासन में तप की महिमा अपरंपार है। एक से बढ़कर एक तपस्वी हुए हैं। भाई गुलाब तपस्वी है, सेवाभावी है, इनकी तपस्या की अनुमोदना करते हैं।

तप अभिनंदन कार्यक्रम में तेरापंथ

सभा दक्षिण हावड़ा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफणा ने अपने विचार रखे। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष गगनदीप बैद, अभिनंदन पत्र का वाचन तेरापंथ सभा के पूर्व अध्यक्ष सुशील गिड़िया ने किया।

पारिवारिक सदस्यों ने सामूहिक तप अनुमोदना गीत का संगान किया। तेरापंथ सभा के मंत्री बसंत पटावरी ने आभार ज्ञापन किया। तप अनुमोदना में अनेक भाई-बहिनो ने तपस्या करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

एनआरआई समिट सम्मोषण...

इनके संस्कार सृजन पर ध्यान दिया जाता रहे। महासभा द्वारा आयोजित एनआरआई समिट से विदेशों में रहने वाले लोगों में धार्मिकता के भाव बने रहे, तेरापंथ धर्मसंघ से जुड़ाव पुष्ट रहे। तेरापंथी महासभा के नए उन्मेष संगठन के लिए अच्छी बात है। यह समिट एनआरआई लोगों को संपोषण देने वाली सिद्ध हो, उनके जीवन में शांति, चित्त में समाधि रहे और अपनी आत्मा के कल्याण के लिए प्रयास करते रहे।

इस समिट में 15 देशों से 200 से अधिक श्रद्धालु भाग ले रहे हैं। इस संदर्भ में महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, समिट कन्वेनर जयेश जैन, सुरेन्द्र पटावरी व प्रवास व्यवस्था

समिति के अध्यक्ष संजय सुराणा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

अच्छा जीवन जीने...

व्यक्ति शक्ति से कुछ नया कर सकता है। जैन दर्शन में आत्मा में अनंत ज्ञान, अनंत शक्ति और अनंत आनंद को स्वीकार करता है। हम भी उस अनंत ज्ञान, अनंत शक्ति और अनंत आनंद को प्राप्त कर सकते हैं। हमें सही दिशा में पुरुषार्थ करना होगा, वही हमें लक्ष्य की ओर ले जाएगा।

हमारे पास शक्ति के तीन स्रोत हैं- मन, वचन और शरीर। हमें शक्ति का उत्पादन करना है और उसे सुरक्षित भी रखना है। तीन शब्द हैं- Use,

Misuse, Abuse, हमें इन्द्रियों के मिसयूज और अब्यूज से दूर रहना है। हम शक्ति के उत्पादन और संरक्षण के प्रति सजग बनें।

मंगल प्रवचन के पश्चात मुनि पारस कुमार जी ने पूज्य प्रवर से 49 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। मुनि उदितकुमार जी ने श्रावक-श्राविकाओं को तपस्या के लिए प्रेरित किया। एनआरआई बालक सार्थ हरकावत ने अपनी प्रस्तुति दी। वर्ल्ड पीस सेंटर लंदन ट्रस्ट के आशु बोहरा, जीतू डेलडिया ने अपने विचार व्यक्त किए। आज्ञा भूतोडिया ने चौबीसी के गीत का संगान किया। पांडेसरा ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

पृष्ठ 12 का शेष

भौतिकता में रहते हुए...

पूज्य प्रवर ने कई तपस्याओं के प्रत्याख्यान करवाए। प्रवक्ता उपासक श्रीचंद बाफणा ने 35 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

उपासक सेमिनार के मंचीय कार्यक्रम में उपासक श्रेणी के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी ने कहा कि छोटे-छोटे श्रद्धा के क्षेत्रों की संभाल उपासक श्रेणी कर रही है। उपासक श्रेणी की विकास यात्रा निरंतर गतिमान है। विनोद बांठिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश श्यामसुखा ने पूज्य प्रवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि उपासक श्रेणी संख्या के साथ

गुणवत्ता में भी विकास कर रही है। कुछ उपासक-उपासिकाएं संयम पद की और अग्रसर होना चाहते हैं। उपासक श्रेणी ने 'तुलसी महाप्रज्ञ का चिंतन हो रहा साकार है' का सुमधुर संगान। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि उपासक श्रेणी गुरुदेव तुलसी के समय में जन्मी हुई है। गुरुदेव तुलसी के समय उपासक श्रेणी से जुड़ने का मुझे सौभाग्य मिला था। उपासक शिविर भी चलते थे, प्रशिक्षण हेतु उपासना भाग 1 एवं भाग 2 पुस्तक भी सामने आई थी। सेमिनार में संख्या भी अच्छी लग रही है। यह सेमिनार तो यहां हो रहा है, बाहर भी अपेक्षा लगे तो यह सेमिनार हो सकते हैं। सेमिनार में भी प्रशिक्षण का अच्छा माध्यम

बन सकता है। उपासक-उपासिकाओं में खूब तत्व ज्ञान का विकास होता रहे। पर्युषण यात्रा एक चीज है, इसके सिवाय भी उपासक श्रेणी की धर्म संघ के लिए उपयोगिता हो सकती है। अनेक कार्य जैसे ज्ञानशाला में कहीं प्रशिक्षण देना है, कहीं जैनजन्म-तेरापंथ के बारे में प्रस्तुति करना हो तो इस श्रेणी का अच्छा उपयोग हो सकता है। धार्मिक संदर्भ में काम करना हो, सार-संभाल या यात्रा करना हो तो इसका यथोचित उपयोग भी हो सकता है। बहुआयामी, विभिन्न उद्देश्यों व विभिन्न उपयोगों वाली उपासक श्रेणी सिद्ध हो सकती है। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

विभिन्न संस्थाओं का शपथ ग्रहण कार्यक्रम समारोह

दिल्ली

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ती 'शासनश्री' मुनि विमल कुमार जी ठाणा-4 के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् दिल्ली का सत्र 2024-25 का शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि से तेरापंथ भवन, रोहिणी दिल्ली में आयोजित किया गया। संस्कारक प्रदीप संचेती, हिम्मत राखेचा, सौरभ आंचलिया, विकास सुराणा, मनीष, बरमेचा, संजय संचेती, महेंद्र श्यामसुखा ने पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से शपथ ग्रहण संस्कार सानन्द संपादित करवाया। तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष विकास चोरडिया ने नव निर्वाचित अध्यक्ष राकेश बैंगानी को पद एवं दायित्व की शपथ दिलाई। तत्पश्चात तेयुप अध्यक्ष ने अपनी पूरी टीम की घोषणा कर उन्हें शपथ दिलाई। 'शासनश्री' मुनि विमलकुमार जी एवं सहवर्ती संतो ने प्रेरणा पाथेय प्रदान कर नव मनोनीत सदस्यों का उत्साह वर्धन किया। इस अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती के महामन्त्री भीखम चंद सुराणा, दिल्ली, रोहिणी, मानसरोवर गार्डन, गाजियाबाद, पश्चिम विहार आदि सभाओं, अणुव्रत समिति, महिला मंडल पदाधिकारियों की गरिमामय उपस्थिति रही। इसके साथ कार्यक्रम में अभातेयुप से दिल्ली शाखा प्रभारी अंकुर लुनिया, तेयुप के पूर्व अध्यक्ष गण, सहित तेयुप के सदस्यगण एवं काफी संख्या में श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संयोजन निवर्तमान मंत्री अमित डूंगरवाल और नव नियुक्त मंत्री मुदित लोढ़ा ने किया। आभार ज्ञापन सहमंत्री शुभम जैन ने किया।

चेन्नई

मुनि हिमांशुकुमारजी ठाणा 2 के सान्निध्य में नवगठित उत्तर चेन्नई सभा (टंडियारपेट) का शपथ ग्रहण समारोह तेरापंथ सभा भवन, साहूकारपेट, चेन्नई में आयोजित हुआ। नवगठित सभा के पदाधिकारियों, टीम को पाथेय प्रदान करते हुए मुनि हिमांशुकुमारजी ने कहा कि शपथग्रहण दायित्व बोध का प्रकार है। पदाधिकारी अपने दायित्वों के प्रति जागरूकता के साथ आगे बढ़ें तो समाज का भी विकास होगा। नवगठित टीम ने शपथग्रहण की है,

वे सदैव संघ सेवा, समाज सेवा के साथ अपना आध्यात्मिक विकास भी करते रहें। इससे पूर्व नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। गौतमचन्द सेठिया ने मंच संचालन करते हुए नवमनोनीत पदाधिकारियों का परिचय प्रस्तुत किया। विचारों की अभिव्यक्ति के साथ जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के उत्तर तमिलनाडु प्रभारी विमल चिप्पड़ ने नवगठित टीम को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। नवमनोनीत अध्यक्ष इन्दरचन्द डूंगरवाल ने अपने विचारों के साथ महासभा द्वारा मिले दायित्वों के साथ क्षेत्रीय लोगों में आध्यात्मिकता, सामाजिकता के विकास को वृद्धिगत करने की बात कही।

रायपुर

मुनि सुधाकर जी व मुनि नरेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर के सत्र 2024-25 की नव कार्यसमिति का शपथ ग्रहण समारोह जन-जन की विधि बनने की ओर अग्रसर 'जैन संस्कार विधि' से संपन्न हुआ।

शुभारंभ मुनिश्री के द्वारा णमोकार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। संस्कारक अनिल दुगड़ व सूर्य प्रकाश बैद ने संपूर्ण विधि मंत्रोच्चार के साथ विधि संपन्न कराई। विजय गीत का संगान गौरव दुगड़ व श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन चुनाव अधिकारी सुरेन्द्र चौरडिया द्वारा किया गया। पूर्व अध्यक्ष निर्मल गांधी ने वर्तमान अध्यक्ष वीरेंद्र डागा को पद व की शपथ दिलाई, तत्पश्चात वीरेंद्र डागा ने अपनी कार्यसमिति की घोषणा करते हुए उन्हें पद व दायित्व निर्वहन की शपथ दिलाई गई। युवाओं को मार्गदर्शन देते हुए मुनि सुधाकर जी ने कहा कि युवाओं में वो शक्ति है जो असंभव को भी संभव बना सकती है आवश्यकता इस बात की है कि वे अपने ऊर्जा कौशल का उपयोग सही दिशा में समाज उत्थान के लिए करें।

मुनि नरेश कुमार जी ने युवाओं को प्रेरणादायक गीत संगान से प्रेरित करने का प्रयास किया। शपथग्रहण समारोह में युवाओं के साथ ही समाजजनों की उपस्थिति रही। विशेष रूप से नेत्रदान आयाम राज्य प्रभारी नवीन दुगड़ उपस्थित थे।



संक्षिप्त खबर

संस्कार शाला की पहली कार्यशाला का आयोजन

जसोल। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल जसोल द्वारा समृद्ध राष्ट्र योजना के तहत नवकार विद्या मंदिर जसोल में संस्कार शाला की पहली कार्यशाला का आयोजन किया गया। अध्यक्ष कंचन देवी ढेलड़िया ने कार्यशाला शुभारंभ करते हुए कार्यशाला का संक्षिप्त विवरण दिया। स्कूल के विद्यार्थियों ने मंगलाचरण किया। मंत्री अरुणा डोसी ने 'महाप्राण ध्वनि' का प्रयोग करवाया और इससे होने वाले लाभ को बताया। पुष्पा बुरड़ ने 'क्रोधी नहीं-सहनशील बनो' विषय पर चंडकोशिक सर्प की कहानी सुनाई। फेना देवी भंसाली ने क्रोध से हानि पर बच्चों से प्रश्न पूछे और आचार्य श्री तुलसी द्वारा रचित 'छोड़ो क्या कोनी क्रोध रो नशों' गीत का संगान किया। जयश्री भंसाली ने क्रोध पर नियंत्रण के उपाय बताए। स्कूल की प्रिंसिपल किरण माहेश्वरी ने महिला मंडल का एवं निवर्तमान मंत्री ममता मेहता ने बच्चों और प्रिंसिपल का आभार ज्ञापन किया।

निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम के अंतर्गत 25वें कारगिल विजय दिवस के अवसर पर स्थानीय गायत्री उद्यान में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर के अंतर्गत मधुमेह एवं रक्त चाप जांच की गई। शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। कुल 59 लोग लाभान्वित हुए। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चोरड़िया, जयंतिलाल गाँधी, विनोद कोठारी एवं रवि चौधरी ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

पचरंगी तप अनुष्ठान

कांटाबांजी। समणी निर्देशिका जिनप्रज्ञा जी एवं समणी क्षांतिप्रज्ञा जी के सान्निध्य में दो पचरंगी तपस्या सानंद संपन्न हुई। समणी द्वय की प्रेरणा से एक पचरंगी कांटाबांजी वासियों तथा एक पचरंगी पश्चिम ओडिशा के श्रावक समाज द्वारा की गई। समणी जिनप्रज्ञाजी ने तपस्या की महत्ता बताते हुए कहा- तप से कर्म की निर्जरा होने के साथ साथ अनेक बीमारियों से भी मुक्ति मिलती है। आयुर्वेद चिकित्सा में लंघन को बहुत महत्व दिया गया है। अतः हमें भी इसका प्रयोग करना चाहिए। सभी तपस्वियों को साधुवाद देते हुए समणी जी ने कहा इन सभी ने अपने आत्मबल का परिचय देकर पचरंगी अनुष्ठान को पूरा किया है। सभी को तपस्या में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हुए सबसे छोटे तपस्वी आरव जैन (बेला) के प्रति विशेष मंगलकामना की। समणी वृंद ने कांटाबांजी श्रावक समाज को चातुर्मास काल में पंचाचार साधना करने की प्रेरणा दी।

रक्तदान शिविर का आयोजन

राजाजीनगर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशनुसार तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर के अंतर्गत इस सत्र का प्रथम मेगा ब्लड डोनेशन कैम्प का आयोजन सीरवी समाज के वडेर आईमाता मन्दिर परिसर नंदिनीलेआउट में आयोजित किया गया। रक्तदान शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से की गई। सीरवी समाज ने तेयुप पदाधिकारियों का सम्मान करते हुए आगे भी ऐसे कैम्प लगाने की बात कही और परिषद परिवार की खूब सराहना की। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया ने भी सीरवी समाज के पदाधिकारियों का सम्मान जैन पट्ट से किया। शिविर प्रायोजक का परिषद परिवार ने धन्यवाद व्यक्त किया। ब्लड बैंक के सहयोग से कुल 56 यूनिट रक्त का संग्रह हुआ।

नियम जितने सूक्ष्म होते हैं साधना उतनी ही बड़ी होती है

गांधीनगर, बैंगलोर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में बैंगलोर स्तरीय व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन गांधीनगर स्थित तेरापंथ भवन में साध्वी उदितयशा जी ठाणा-४ के सान्निध्य में हुआ। तत्पश्चात् विजय गीत का संगान परिषद साथियों द्वारा किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन मांडोत द्वारा किया गया। परिषद् द्वारा संचालित प्रज्ञा संगीत सुधा ने मंगलाचरण किया। परिषद् अध्यक्ष विमल धारीवाल, सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने सभी का स्वागत किया। साध्वी उदितयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जो मनुष्य असत्य से सत्य की और, अन्धकार

से प्रकाश की और, मृत्यु से अमरत्व की और बढ़ता है अपने जीवन में इन संकल्पों को स्वीकार करता है वो परम लक्ष्य को प्राप्त करता है। नियम जितने सूक्ष्म होते हैं उसकी साधना उतनी ही बड़ी होती है, जिस प्रकार तलवार की धार जितनी सूक्ष्म और तेज होती वो उतनी ही खतरनाक होती है। प्रतिज्ञा और संकल्प को सिद्ध करने के लिये आग होनी चाहिए, ललक होनी चाहिये। साध्वी संगीतप्रभा जी ने युवकों को सहिष्णु बनने की प्रेरणा प्रदान की। साध्वी भव्ययशाजी ने गीतिका के माध्यम से वीतरागता के पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की। साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने गीतिका का संगान किया। परिषद् प्रभारी अमित दक ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बैंगलोर परिषद् अभातेयुप निर्देशित सभी

कार्यों को भव्य रूप से संपादित करती आ रही है। उन्होंने 'प्रतिज्ञा हमारे जीवन में क्यों, कब और कैसे' विषय पर अपने विचार रखे। अभातेयुप वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन मांडोत की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता विमल कटारिया ने छोटे-छोटे संकल्पों के द्वारा अपने आप का विकास करने का मार्ग बताया। मुख्य वक्ता सीपीएस राष्ट्रीय प्रशिक्षक अरविंद मांडोत ने प्रतिश्रुति शब्द की व्याख्या कर संकल्प की साधना और उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला। अभातेयुप वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने अपने विचार व्यक्त करते हुए विभिन्न कहानियों के माध्यम से संकल्प और प्रतिज्ञा का महत्व बताया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री राकेश चोरड़िया तथा आभार ज्ञापन आलोक कुंडलिया ने किया।

लोगस्स कल्प अनुष्ठान का आयोजन

कोयंबटूर। तेरापंथ जैन भवन में मुनि दीप कुमार जी ठाणा-२ के सान्निध्य में लोगस्स कल्प अनुष्ठान का भव्य आयोजन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा कोयंबटूर द्वारा किया गया। मुनि दीप कुमारजी ने लोगस्स का महत्त्व बताते हुए कहा लोगस्स तीर्थंकर स्तुति का महान मंत्र है। यह एक महाशक्ति है। भक्ति साहित्य की एक अमर अलौकिक, रहस्यमयी और विशिष्ट रचना है। लोगस्स शाश्वत सुख का राजपथ है। आरोग्य, बोधि, और सिद्धि प्रदाता है। लोगस्स में भक्ति की भागीरथी प्रवाहित होती है। इसमें मंत्रों के अक्षरों की ऐसी अपूर्व और अनूठी संयोजना है कि इसके स्तवन से सब मनोरथ सिद्ध होते हैं। मुनिश्री ने लोगस्स के प्रभाव के प्रसंगों को सुनाकर श्रावक-श्राविकाओं को भक्ति रस से आप्लावित किया। मुनि श्री के लोगस्स के विविध प्रयोगों के बारे में बताते हुए लोगस्स कल्प अनुष्ठान कराया।

108 दिवसीय दिव्य कोटी जप महा अनुष्ठान का शुभारंभ

बीड।

युगप्रधान धर्म दिवाकर आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी तथा सहवर्ती मुनि आदित्य कुमारजी की प्रेरणा से बीड चातुर्मासिक धर्मोत्सव 2024 के अंतर्गत 108 दिवसीय दिव्य कोटी जप महा अनुष्ठान (नवकार महामंत्र का सवा करोड़ जप) की शुभ शुरुआत हुई। प्रवचन कार्यक्रम में प्रतीकात्मक रूप में डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी ने सामूहिक नवकार महामंत्र का जप करवा कर शुभारंभ करवाते हुए कहा इस महा अनुष्ठान में प्रतिदिन 11 माला नवकार महामंत्र के पांच पदों को फेरने का संकल्प करवाया।

मुनिश्री ने कहा कि नमस्कार महामंत्र मंगलकारी कल्याणकारी एवं विघ्न-बाधा हारी के रूप में प्रतिष्ठित है। बीड क्षेत्र इतना छोटा होते हुए भी यहां के श्रावकों ने जप के लिए बहुत अच्छा उत्साह बताया है। इस अनुष्ठान के अंतर्गत ढाई करोड़ से ज्यादा नवकार महामंत्र की आराधना की जाएगी। तेरापंथ महिला मंडल बीड अध्यक्ष सविता मरलेचा एवं तेरापंथ सभा अध्यक्ष संजय समदड़िया, जैनेंद्र मरलेचा ने उपस्थित आराधकों को मोमेंटो भेंट किया। ज्ञातव्य है कि मुनिश्री की प्रेरणा से सवा- सवा करोड़ के दो जप अनुष्ठानों की आराधना 219 व्यक्ति एक साथ मिलकर कर रहे हैं।

प्रसन्नता से बढ़ती रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति

चेन्नई।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या डॉ. साध्वी गवेषणाश्री के सान्निध्य में 'बी हैप्पी, नॉर्मल बीपी' कार्यशाला का आयोजन जैन तेरापंथ नगर, माधावरम् में हुआ। डॉ. साध्वी गवेषणाश्रीजी ने कहा कि हम अपने कपड़े बदलते हैं, हमारे एड्रेस बदलते रहते हैं, लेकिन हम हमारे चेहरे को स्माईल नहीं रख पाते हैं, बदलते

रहते हैं। हमें अपने जीवन की प्रसन्नता को नहीं भूलना चाहिए। जीवन को यदि बीमारी रहित रहना है तो खुश रहें। यह सुखी जीवन का बहुत बड़ा मंत्र है। रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति को बढ़ाने का बहुत बड़ा साधन है। जरूरत है किसी से बात करे तो मुस्कुराकर करे, किसी से मिले तो मुस्कुराकर मिले। हम जो भी कार्य करे खुशियों के साथ करें। साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि मुस्कान वह चंदन का तिलक है,

जिसके माथे पर लगेगा, वह भी महकेगा और जिस अंगूठे से लगाओगे वह भी सुगन्धित हो जायेगा। स्वस्थ रहना है तो आवश्यक है दिन का प्रारंभ और समापन खुशी के साथ करें। साध्वी दक्षप्रभाजी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी मेरुप्रभाजी ने कुशलतापूर्वक कार्यक्रम का संचालन किया। मुंबई से समागत महिला मंडल प्रभारी सुनीता गेलडा ने अपने विचार रखे।



दक्षिणांचल स्तरीय कन्या कार्यशाला 'ज्योतिर्मय'



विजयनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर के आयोजन में तेरापंथ कन्या मंडल विजयनगर द्वारा 'ज्योतिर्मय - एनलाइटेन योरसेल्फ, एनलाइटेन द वर्ल्ड' नामक दो दिवसीय दक्षिणांचल स्तरीय कन्या कार्यशाला का शुभारंभ अहम भवन विजयनगर बैंगलोर के प्रांगण में किया गया, जिसमें 21 क्षेत्रों से लगभग 250 कन्याओं ने भाग लिया।

कार्यशाला का प्रथम सत्र 'अरुणोदय - वेलकम टू द न्यू एरा' का शुभारंभ साध्वी सिद्धप्रभा जी ठाणा 4 के सान्निध्य में राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा की अध्यक्षता में किया गया। कन्या मंडल विजयनगर द्वारा सुमधुर मंगलाचरण किया गया तथा कन्या शक्ति को दर्शाते हुए वीडियो क्लिप के माध्यम से प्रस्तुति दी गई। राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य माला कातरला ने परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के संदेश का वाचन किया। रा. कार्य. स. अनीता बरडिया ने साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के संदेश का वाचन किया। तेममं विजयनगर की अध्यक्ष मंजू गदिया ने स्वागत वक्तव्य दिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा हमें अपने सफर की शुरुआत किसी न किसी बिंदु से करनी पड़ती है, तभी मंजिल प्राप्त होती है। कन्या जीवन जीने की कला सीखते हुए नवीन सृजन की और कदम बढ़ाए। हम अपनी योग्यता और हुनर के साथ-साथ संस्कृति की गरिमा बनाए रखते हुए आगे बढ़ें और ज्योतिर्मय बनें।

साध्वी सिद्धप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज कन्याओं और महिला मंडल का जो स्वरूप हमारे सामने है वह गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के अथक परिश्रम और उर्वरक चिंतन का प्रतिफल है। शिक्षा के साथ-साथ कन्याएं हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं ऐसे में करियर के साथ-साथ परिवार में भी

सामंजस्य बनाए रखना है। इसके लिए साध्वीश्री जी ने तीन सूत्र दिए - कहना सीखो, रहना सीखो और सहना सीखो।

राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी अदिति सेखानी ने कहा कि उन्नत परिवार, राष्ट्र और समाज में कन्या की अहम भूमिका है। महामंत्री नीतू ओस्तवाल ने अपने वक्तव्य के द्वारा कन्याओं से कहा कि ईश्वर ने सभी के भीतर कुछ ना कुछ योग्यता दी है, हमें अपने भीतर की शक्ति को पहचानना है तभी हम स्वयं ज्योतिर्मय बनाकर दूसरे को ज्योतिर्मय बना सकते हैं। राष्ट्रीय कन्या सह प्रभारी सोनम बागरेचा ने कन्याओं की कार्य क्षमता और शक्ति को बताते हुए कहा कि यह कार्यशाला 'फार द गर्ल, बाई द गर्ल, टू द गर्ल' की थीम पर आधारित है।

सभा अध्यक्ष मंगल कोचर ने कन्या मंडल और महिला मंडल को कार्यशाला के सफल आयोजन के लिए शुभकामनाएं प्रेषित की। अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पवन मांडोत एवं टीपीएफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हिम्मंत मांडोत ने शुभकामनाएं प्रेषित की। विजयनगर कन्या मंडल ने 2023-24 में किए गए विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी वीडियो क्लिप द्वारा प्रदान की। परिचय प्रस्तुति कन्या शक्ति के अंतर्गत कर्नाटक, तमिलनाडु तथा हैदराबाद की कन्याओं द्वारा प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम के सफल आयोजन में विशेष सहयोग हेतु प्रायोजक परिवारों का सम्मान विजयनगर मंडल द्वारा किया गया। सत्र का संचालन विजयनगर कन्या मंडल से जाह्नवी कावड़िया एवं तन्वी मांडोत ने किया तथा आभार ज्ञापन मंड्या कन्या मंडल संयोजिका चेष्टा बुरड़ ने किया।

कार्यशाला के दूसरे सत्र 'तेजस्विता' का शुभारंभ यशवंतपुर कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण से किया गया। इस सत्र के अंतर्गत सात क्षेत्र की कन्याओं ने 'मेरे सपनों का कन्या मंडल' विषय पर अपनी प्रस्तुतियां दीं। तीसरे सत्र ब्रिज बिल्डर में राष्ट्रीय कन्या मंडल सह प्रभारी सोनम

बागरेचा द्वारा कन्याओं की 15 टीमों को विभिन्न विषयों पर एक निश्चित समय में रील बनाने का काम दिया गया। बेस्ट रील के निर्णायक कर्नाटक प्रभारी मधु कटारिया एवं तेलंगाना एवं केरल प्रभारी अनीता बरडिया रहे। सत्र का कुशल संचालन हुबली कन्या मंडल से भावना बागरेचा ने किया।

चतुर्थ सत्र 'द वाइस ऑफ केएम' में अभातेममं से माला कातरला ने विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से कन्याओं को चहुंमुखी विकास, व्यक्तित्व विकास, सशक्तिकरण के विभिन्न सूत्रों एवं मापदंडों से अवगत कराते हुए कन्याओं में सामाजिक, पारिवारिक, आध्यात्मिक क्षेत्र में रुझान बढ़ने का प्रयास किया। साथ ही इस सत्र में कन्याओं की विभिन्न जिज्ञासाओं का समाधान भी साध्वी सिद्धप्रभा जी एवं अभातेममं के सम्मानीय सदस्यों द्वारा किया गया। साध्वी दीक्षाप्रभाजी ने अपने जीवन के अनुभवों को सुनाते हुए कन्याओं का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल हनुमंत नगर द्वारा किया गया।

कार्यशाला के प्रथम दिन के अंतिम सत्र 'आलोक- रिवाइव द रूट्स' सत्र का शुभारंभ शनिवारीय सामूहिक सामायिक के साथ हुआ। कन्या मंडल टी दासरहल्ली द्वारा मंगलाचरण की मधुर प्रस्तुति दी गई। साध्वी दीक्षाप्रभा जी ने कहा कि जिस तरह वृक्ष का महत्वपूर्ण अंग मूल होता है, इसी तरह हमारे जीवन की रूट है हमारी वैल्यू, हमारे आदर्श, हमारी संस्कृति। साध्वी आस्थाप्रभा जी ने स्पिरिचुअलटी पर अपने विचार व्यक्त हुए कहा कि जब हम इंद्रियों से बाहर की दुनिया देखते हैं तो वह कहलाता है भौतिकवाद और जब हम इंद्रियों को बंद कर अपनी भीतर झांकते हैं तो वह बन जाता है अध्यात्म।

साध्वीश्री ने गीतों के आधार पर कन्याओं को एक रोचक गेम खेलाया। सत्र का संचालन आरआर नगर कन्या मंडल से आर्या संचेती एवं आभार सिंधनूर कन्या मंडल से स्नेहा नाहर ने किया।

बोलती किताब

आनंद के साथ जीएं



परिवार के साथ कैसे रहें ?



आचार्य महाश्रमण

सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन का महत्वपूर्ण सूत्र है—सहिष्णुता। जहां समन्वय की चेतना होती है, वहां सहिष्णुता का विकास होता है। यदि सहिष्णुता है तो रुचि-भेद को सहा जाएगा, उसका परिष्कार किया जाएगा यदि सहिष्णुता की चेतना जागृत है तो विचार भेद को भी सह लिया जाएगा। शान्त सहवास का सफल सूत्र है सहिष्णुता।

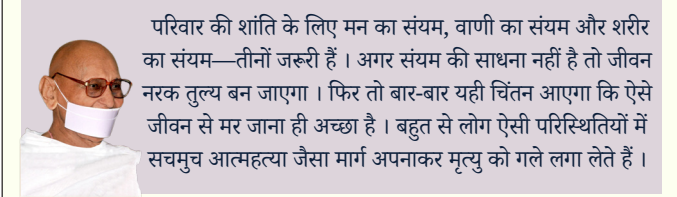
जीवन व्यवहार : सामंजस्य

हम अपने जीवन-व्यवहार में सामंजस्य की बात को महत्व नहीं देंगे तो शांतिपूर्ण सहवास की बात संभव नहीं बन पाएगी। यदि साथ में रहना है, सह-चिंतन, सह-चित्त, सह-वास या सह-अस्तित्व चाहते हैं तो सामंजस्य का सूत्र अपनाना ही होगा। आग्रह को त्यागे बिना सामंजस्य संभव नहीं है।

अमूल्य धरोहर : जीने की कला सीखें और आनंद के साथ जीएं। यह मानव शरीर बड़े सुयोग से और अच्छे कर्मों की बढौलत प्राप्त हुआ है। यह सबसे बड़ी निधि है। इसका एक-एक अवयव लाखों-करोड़ों खर्च करके भी किसी दुकान से प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए इसकी सुरक्षा करो। इसके लिए एक बात पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। वह है आहार - शुद्धि।

संस्कार निर्माण : आवेश पर नियंत्रण का अभ्यास, एकाग्रता बढ़ाने का अभ्यास और संकल्पशक्ति का विकास - अगर ये तीन बातें अभिभावक अपने बच्चों को सिखाने का प्रयत्न करें तो उसका परिणाम अत्यंत सुखद होगा।

स्वः नियंत्रण : अहंकार आग्रह के रूप में सामने आता है और लोभ स्वार्थ के रूप में सामने आता है। ये दोनों वृत्तियां हिंसा को जन्म देती हैं और परिवार को अदालत की शरण में ले जाती हैं। अगर इन दोनों पर प्रशिक्षण के द्वारा हमारा नियंत्रण हो तो हिंसा को सिर उठाने का अवसर ही नहीं मिलेगा।



परिवार की शांति के लिए मन का संयम, वाणी का संयम और शरीर का संयम—तीनों जरूरी हैं। अगर संयम की साधना नहीं है तो जीवन नरक तुल्य बन जाएगा। फिर तो बार-बार यही चिंतन आएगा कि ऐसे जीवन से मर जाना ही अच्छा है। बहुत से लोग ऐसी परिस्थितियों में सचमुच आत्महत्या जैसा मार्ग अपनाकर मृत्यु को गले लगा लेते हैं।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> books@jvbharati.org

द पॉवर ऑफ मंत्र कार्यशाला का हुआ आयोजन

इरोड। मुनि रश्मिकुमारजी एवं मुनि प्रियांशु कुमार जी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन, इरोड में आयोजित 'मंत्र से करें शक्ति का जागरण' (द पॉवर ऑफ मंत्र) की कार्यशाला आयोजित की गई। मुनि रश्मिकुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ अनेको मंत्रों की आराधना करवाई गई। मुनिश्री ने मंत्र साधना के प्रयोग, ध्यान के प्रयोगों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। मुनि प्रियांशु कुमार जी ने भी मंत्र साधना से शक्ति के प्रेरणादायक उदाहरणों को प्रस्तुत किया।

❖ दुनिया में चार चीजें दुर्लभ मानी गई हैं— मनुष्यता, धर्मश्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।

— आचार्य श्री महाश्रमण

वनस्पति के प्रति भी रखें समता और अनासक्ति का भाव : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

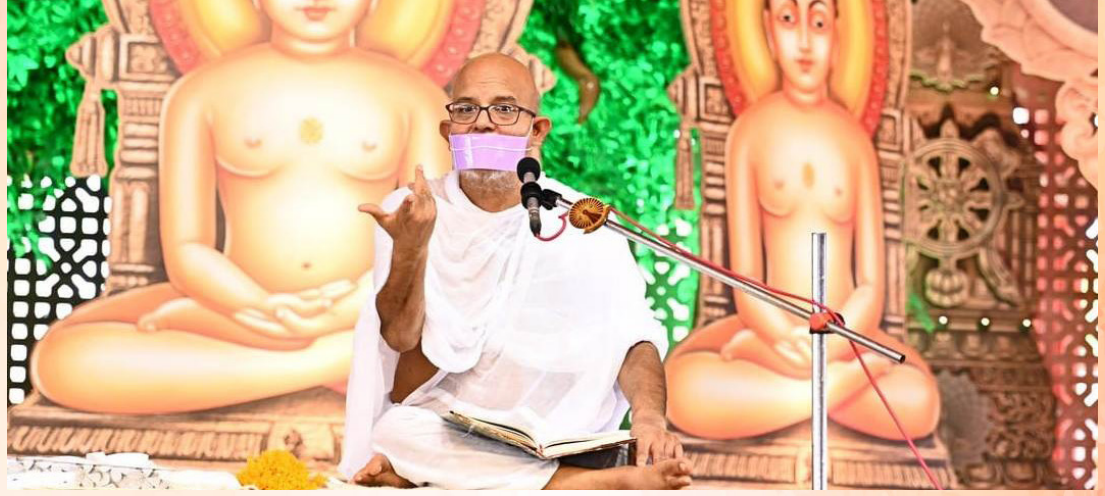
6 अगस्त, 2024

धर्म दिवाकर आचार्य श्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आयारो आगम के प्रथम अध्ययन में बताया गया है कि जीव का प्राणातिपात करना पाप होता है। हिंसा न करना अहिंसा है। राग-द्वेष का भाव, प्रमाद, हिंसा का मूल कारण बनता है। जहां तक पाप कर्म का संबंध है वह हमारे राग-द्वेष व भीतर के भाव पर आधारित है। हिंसा को हम दो रूप में देख सकते हैं- द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा। द्रव्य हिंसा में प्राणी के प्राणों का हनन हो तो गया पर जिस प्राणी के द्वारा वह हंतव्य हुआ है उसके हिंसा के भाव नहीं है तो वह द्रव्य हिंसा है, भाव हिंसा नहीं है। कहीं द्रव्य हिंसा है, कहीं भाव हिंसा है। कहीं द्रव्य और भाव हिंसा है।

जीवजीवेतेदयानहीं, मारेतेहिंसामतजाण। मारण वाले ने हिंसा कही, नहीं मारे थे दया गुण खान।।

जीव अपने आयुष्य बाल से जीता है वह हमारी दया का कारण नहीं है। कोई जीव स्वतः मर जाए उसके कारण हम नहीं हैं। जो मारते हैं वह हिंसा है, जो नहीं मारते वह गुण की खान होते हैं। हिंसा के भाव हैं पर जीव मरा नहीं तो भी भाव हिंसा का पाप लग जाता है। आदमी सलक्ष्य शस्त्र फेंकता है और प्राणी मर जाता है तो यहां द्रव्य और भाव हिंसा दोनों हो गईं।

वनस्पति काय का विशाल जगत है उनके प्रति जो गुप्त है वह अनाज्ञा में है। भगवान की आज्ञा में धर्म है अनाज्ञा में अधर्म है। वनस्पति के प्रति राग-द्वेष का भाव है वह एक प्रकार से हिंसा है। राग-द्वेष के भाव से युक्त प्राणी अगुप्त होता है। आदमी को छह प्रकार



के जीवों को जानकर उनकी हिंसा से बचने का प्रयास करना चाहिए। हमारे यहां मुमुक्षु को दीक्षा से पहले नव तत्वों का ज्ञान होना आवश्यक है। आदमी को वनस्पति जनित पदार्थों के प्रति भी समता, अनासक्ति और अप्रमत्तता का भाव रखने का प्रयास करना चाहिए।

मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यप्रवर ने आचार्यश्री तुलसी द्वारा रचित पुस्तक 'चन्दन की चुटकी भली' के आख्यान क्रम को आगे बढ़ाया।

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने उद्बोधन देते हुए कहा कि जैसे समुद्र का पानी अमाप्य है, तराजू से नापा नहीं

जा सकता। वैसे ही महापुरुषों के गुणों को मापा नहीं जा सकता। जैन जगत में सर्वश्रेष्ठ महापुरुष तीर्थंकर होते हैं, उनके गुणों को मापा नहीं जाता, वे तो गुण समुद्र हैं। तीर्थंकर तो अनंत गुणों के धारक होते हैं। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

दक्षिणांचल-शंखनाद जीत के गीत का हुआ आयोजन

दासरहल्ली।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेयुप दासरहल्ली एवं सहयोगी संस्था तेयुप गांधीनगर, विजयनगर, राजाजीनगर, आर आर नगर, एसबीएसटी, यशवंतपुर द्वारा यशवंतपुर स्थित मेवाड़ भवन में अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में दक्षिणांचल स्तरीय दायित्व बोध कार्यशाला - शंखनाद का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम संपूर्ण युवा शक्ति विजयनगर में विराजित साध्वी सिद्धप्रभा जी आदि ठाणा के दर्शन कर, आशीर्वचन प्राप्त करने पहुंची, जहाँ राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने कार्यशाला के विधिवत शुभारंभ की घोषणा की।

मेवाड़ भवन में झण्डारोहण के पश्चात तेयुप दासरहल्ली ने दक्षिण से समागत सभी युवकों का तिलक से स्वागत कर सभी को किट प्रदान किया। नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के बाद विजयगीत का संगान तेयुप विजयनगर, दासरहल्ली एवं एचबीएसटी परिषद के साथियों ने किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने किया। सर्वप्रथम आयोजक परिषद अध्यक्ष कन्हैयालाल गांधी ने कार्यशाला संभागियों का स्वागत करते हुए इस आयोजन की स्वीकृति हेतु राष्ट्रीय नेतृत्व का धन्यवाद ज्ञापित किया। अध्यक्ष गांधी ने परिषद के कार्यों का विवरण



प्रस्तुत करते हुए इस कार्यक्रम में एक नवीन एटीडीसी के उद्घाटन की घोषणा की। तेयुप गांधीनगर आरआरनगर, राजाजीनगर परिषद के साथियों ने 'ओ युवा रे सीधी राहों पर क्या चलना' गीत का संगान किया।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रथम पवन मांडोत ने कार्यशाला की प्रस्तावना रखते हुए सभी उपस्थित संभागियों का बैंगलोर की धरा पर स्वागत किया एवं युवकों को प्रोत्साहित करते हुए निरंतर गतिमान होने कि प्रेरणा दी। राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय रमेश डागा ने स्वागत वक्तव्य दिया एवं तेयुप टी. दासरहल्ली को कार्यशाला आयोजन और व्यवस्था हेतु शुभकामना प्रेषित की तथा सभी को धर्म संघ की

सेवा में रत रहने की प्रेरणा प्रदान की।

इस कार्यक्रम में विशेष आमंत्रित वक्ता पारस भंडारी (चेयरमैन, आदिश्वर इंडिया लिमिटेड) ने अपने वक्तव्य में अपने अनुभवों को साझा करते हुए शून्य से शिखर तक का सफर समझाया। लेट्स स्टार्टअप की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए महेश नाहर ने अपने अनुभव साझा किए और अपनी मेहनत की कमाई को सही तरह से निवेश करने की जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर आरसीबी क्रिकेट टीम खिलाड़ी वैशाक विजय कुमार भी उपस्थित हुए जिन्होंने संभागियों की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए एवं अपने जीवन की यात्रा बताते हुए जीवन में आगे बढ़ने की राह

दिखाई। किशोर मंडल सदस्यों द्वारा तेरापंथ के आचार्यों पर आधारित नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसका संयोजन राष्ट्रीय किशोर मंडल प्रभारी अरविंद पोखरना ने किया। मुख्य वक्ता अभातेयुप परामर्शक विमल कटारिया ने जीवन में व्यापार, समाज व परिवार में सामंजस्य और दोस्ती पर अपने विचार व्यक्त किये। मुख्य वक्ता सीपीएस के राष्ट्रीय प्रशिक्षक अरविंद मांडोत ने संस्था में कार्य करने और कार्यकर्ता को जोड़ने पर अपने विचार व्यक्त किए। अभातेयुप महामंत्री अमित नाहटा ने संविधान की जानकारी प्रदान करते हुए परिषद, अध्यक्ष व कार्यकर्ता के दायित्व विषय पर विचार व्यक्त किए। अंत में सभी संभागी परिषदों

का सम्मान किया गया। इस आयोजन में तेयुप दासरहल्ली से संयोजक कुशल बाबेल, सह-संयोजक देवीलाल गांधी व अभातेयुप टीम बैंगलोर का पूर्ण सहयोग रहा। रमेश गौतमकुमार, सुनीलकुमार, सोहनकुमार भटेवरा परिवार का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। व्यवस्था की दृष्टि से तेयुप गांधीनगर ने रजिस्ट्रेशन, तेयुप विजयनगर ने सम्मान, तेयुप आरआरनगर ने डिजिटल प्रिंट, तेयुप यशवंतपुर ने आवास, तेयुप राजाजीनगर ने भोजन एवं तेयुप एचबीएसटी ने बैठक व्यवस्था संभाली।

कार्यशाला का समापन सत्र साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में गुरु वंदना के साथ पूर्ण हुआ। इस अवसर पर अभातेयुप परिवार के साथ अभातेयुप पूर्व कोषाध्यक्ष कैलाश बोराणा, श्रेष्ठ कार्यकर्ता प्रकाश लोढा, तेयुप परामर्शक लादुलाल बाबेल, मनोज मेहता, सभा ट्रस्ट अध्यक्ष भगवतीलाल मांडोत, महिला मंडल अधिका नेहा चावत के साथ दासरहल्ली परिषद के पूर्व अध्यक्ष, पदाधिकारी, कार्यकर्ता, परिषद के सदस्यों के साथ दक्षिण की परिषदों के पदाधिकारी एवं युवा शक्ति के साथ लगभग 350 की उपस्थिति रही।

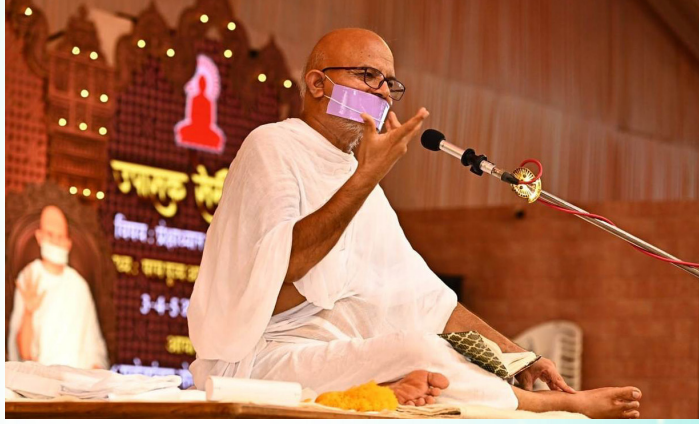
कार्यक्रम का संचालन अभातेयुप से अमित दक, दिनेश मरोठी व परिषद मंत्री शुभम् बाबेल व आभार ज्ञापन टी.दासरहल्ली प्रभारी गौतम खाब्या ने किया।

भौतिकता में रहते हुए आध्यात्मिकता में जीने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

5 अगस्त, 2024

जिन शासन प्रभावक आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आयारो आगम का अमृत पान कराते हुए फरमाया कि शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श ये पांच विषय भौतिक जगत के अंग हैं। भौतिक जगत पुद्गल का होता है। एक ओर अध्यात्मवाद है तो दूसरी ओर भौतिकतावाद है। हर व्यक्ति के लिए भौतिकता से मुक्त होकर जीवन जीना तो मुश्किल हो सकता है। चौदहवें अयोगी केवली गुणस्थान वाले तो भौतिकता से पूर्णतया मुक्त होते हैं। वे श्वास भी नहीं लेते, ना खाते हैं, ना पीते हैं, शरीर, मन, वचन की प्रवृत्ति नहीं है। भौतिकता से मुक्त सिद्ध आत्माएं होती हैं। शेष तेरह गुणस्थान तक तो भौतिकता किसी न किसी रूप में जुड़ी रहती है। शब्द, रूप, रस, गंध व स्पर्श को गुण कहा गया है। जो विषय हैं, वे नाना प्रकार के भावों के संक्रमण के हेतु बन जाते हैं। सिद्ध भगवान एक ही समय में ज्ञाता और द्रष्टा भाव नहीं रखते हैं, वे एक समय में केवल ज्ञान से जानते हैं और दूसरे समय में देखते हैं अथवा एक समय में देखा और दूसरे समय में जाना। एक समय में ज्ञाता और द्रष्टा नहीं होते।



बहुआयामी, विभिन्न उद्देश्यों व उपयोगों वाली सिद्ध हो सकती है उपासक श्रेणी।

हमारे में परिवर्तन हो सकता है जैसा देखेंगे वैसा भाव आएगा यह शब्द आदि जो विषय हैं वे हमारे भावों के संक्रमण का हेतु बनते हैं। भाव और पदार्थ का संबंध भी देखा जा सकता है यह पांच विषय वनस्पति जगत से संबंधित हैं। पदार्थ के प्रति आसक्ति है तो वस्तुओं को पाने का प्रयास होता है। प्रिय वस्तु को देखने से राग भाव आ सकता है। पदार्थ हमारे उपयोग में भी आते हैं, पर उनके प्रति आसक्ति का भाव ना हो, राग-द्वेष का भाव न

आए। भौतिकता में आध्यात्मिकता हो, भौतिकता में रहते हुए आध्यात्मिकता में जीने का प्रयास करें।

उपासक उपासिकाएं हैं, जीवन में पदार्थों के बिना चल पाना संभव नहीं है, पर भौतिकता में संयम हो। राग-द्वेष से मुक्त रहने की साधना आध्यात्मिक साधना हो सकती है। राग-द्वेषात्मक आवेशात्मक भाव ना उभरें। भावों का संक्रमण हो तो अच्छे भाव आए। गुरु की प्रशंसा होने से अच्छे भाव आ सकते हैं। यह हमारी साधना बन सकती है। गुण हमारे गुणकारी बन जाएं।

मुख्य प्रवचन के पश्चात 'नीति रो प्यालो' के आख्यान के माध्यम से पूज्य प्रवर ने समझाया कि लाभ से लोभ बढ़ता है।

(शेष पेज 8 पर)

अर्हम्
साध्वी लावण्यश्रीजी
का देवलोकगमन



जीवन परिचय

- जन्म :** वि. सं. 2010 वैशाख शुक्ल षष्ठी (19 मई 1954, K.G.F.)
माता : स्व. सायरबाई संचेती
पिता : स्व. जीवराज संचेती (भेंसाणा निवासी, KGF प्रवासी)
वैराग्य प्रेरणा : 'शासनश्री' साध्वी श्री सोहनकुमारी जी, छापरा
दीक्षा : गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के मुखकमल से कार्तिक शुक्ला, पंचमी वि. सं. 2026, बेंगलुरु।
अग्रगण्य : वि. सं. 2073, आश्विन शुक्ला तृतीया (4 अक्टूबर 2016)
विशेष : 'शासनश्री' साध्वी श्री सोहनकुमारी जी के साथ लगभग 43 वर्ष तक साथ, फिर साध्वी लज्जावतीजी के साथ रहे। आगम बत्तीसी का 2 बार पारायण। दशवैकालिक का प्रायः प्रतिदिन स्वाध्याय। दूध, दही का 40 वर्षों से त्याग। दक्षिण भारत की प्रथम साध्वी होने का गौरव। जन्म, दीक्षा और प्रयाण कर्नाटक में ही।
संघ में परिवार से दीक्षित सदस्य : मुनि श्री दुलहराजजी (मामा) साध्वी श्री दर्शनविभाजी (भानजी)
पदयात्रा : ओडिशा प्रांत को छोड़कर प्रायः संपूर्ण भारत।
देवलोकगमन : वि. सं. 2081 श्रावण अमावस्या (4 अगस्त 2024) सिंधनूर, कर्नाटक।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

